



Study AV Kand 17 Hindi

अथर्ववेद 17.1.1 से 30

परमे व्योमन् सूक्त

अथर्ववेद 17.1.1

विषासहिं सहमानं सासहानं सहीयांसम् ।
सहमानं सहोजितं स्वर्जितं गोजितं सन्धनाजितम् ।
ईडयं नाम हव इन्द्रमायुष्मान्भूयासम् ॥1॥

(विषासहिम्) सर्वशक्तिमान्, सभी शक्तियों से ऊपर सर्वोच्च परास्त करने की शक्तियाँ (सहमानम्) जिसमें काबू में करने का बल है (सासहानम्) जो सभी विरोधाभासों और चुनौतियों को तुरन्त जीतने की शक्ति रखता है (सहीयांसम्) जो अत्यन्त बलशाली है (सहमानम्) जो नियमित और लगातार है, धैर्यशाली है, अत्यन्त सहिष्णु और प्रतिरोधक शक्ति वाला है (सहः जितम्) जो अन्ततः विजेता है (स्वः जितम्) जो अपनी शक्तियों का स्वामी है (गो जितम्) जो गऊओं आदि तथा अपनी इन्द्रियों का सर्वोच्च नियंत्रक है (सन्धना जितम्) जिसने सभी भिन्न-भिन्न सम्पदाओं (मानवता की और दिव्यता की) पर विजय प्राप्त की है (ईडयम्) सम्मान के योग्य, पूजा के योग्य (नाम) नाम (हव) मैं बुलाता हूँ, आह्वान करता हूँ, पूजा करता हूँ (इन्द्रम्) सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा (आयुष्मान्) लम्बी और स्वस्थ आयु धारण करने वाला (भूयासम्) मैं बन सकूँ।

नोट :- अथर्ववेद 17.1.1 से 5 तक समान प्रकृति के मन्त्र हैं, केवल प्रार्थनाओं में भिन्नता है।

व्याख्या :-

इन्द्र, सर्वोच्च नियंत्रक, के दिव्य लक्षण क्या हैं?

इन्द्र पुरुष क्या प्रार्थना करते हैं? (1)

इस सूक्त के देवता 'आदित्य' हैं जो 'इन्द्र' और 'विष्णु' की संयुक्त शक्तियाँ हैं। ब्रह्म ऋषि 'आदित्य' का आह्वान करते हैं। ब्रह्म ऋषि सदा के लिए ब्रह्म, परमात्मा में स्थापित हैं।

यह मन्त्र इन्द्र, सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा के नौ महान् और दिव्य लक्षणों को सूचीबद्ध करता है :-

1. (विषासहिम्) सर्वशक्तिमान्, सभी शक्तियों से ऊपर सर्वोच्च परास्त करने की शक्तियाँ
2. (सहमानम्) जिसमें काबू में करने का बल है
3. (सासहानम्) जो सभी विरोधाभासों और चुनौतियों को तुरन्त जीतने की शक्ति रखता है
4. (सहीयांसम्) जो अत्यन्त बलशाली है
5. (सहमानम्) जो नियमित और लगातार है, धैर्यशाली है, अत्यन्त सहिष्णु और प्रतिरोधक शक्ति वाला है
6. (सहः जितम्) जो अन्ततः विजेता है
7. (स्वः जितम्) जो अपनी शक्तियों का स्वामी है

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



8. (गो जितम्) जो गऊओं आदि तथा अपनी इन्द्रियों का सर्वोच्च नियंत्रक है
9. (सन्धना जितम्) जिसने सभी भिन्न-भिन्न सम्पदाओं (मानवता की और दिव्यता की) पर विजय प्राप्त की है
 महान् और दिव्य ऋषि प्रार्थना करता है कि "मैं इन्द्र, सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा को बुलाता हूँ, आह्वान करता हूँ जो नाम सम्मान के योग्य है, पूजा के योग्य है। मेरा जीवन दीर्घ और स्वस्थ आयु वाला हो।"
 यह मन्त्र हमें भी प्रेरित करता है कि हम सभी सर्वोच्च शक्तियों के लिए परमात्मा का सम्मान करें और उसके बाद पूर्ण कल्याण की प्रार्थना करें।

सूक्ति :- (आयुष्मान् भूयासम् – अथर्ववेद 17.1.1) मेरा जीवन दीर्घ और स्वस्थ आयु वाला हो।

अथर्ववेद 17.1.2

विषासहिं सहमानं सासहानं सहीयांसम्।
 सहमानं सहोजितं स्वर्जितं गोजितं सन्धनाजितम्।
 ईडयं नाम हव इन्द्र प्रियो देवानां भूयासम्॥2॥

(विषासहिम्) सर्वशक्तिमान्, सभी शक्तियों से ऊपर सर्वोच्च परास्त करने की शक्तियाँ (सहमानम्) जिसमें काबू में करने का बल है (सासहानम्) जो सभी विरोधाभासों और चुनौतियों को तुरन्त जीतने की शक्ति रखता है (सहीयांसम्) जो अत्यन्त बलशाली है (सहमानम्) जो नियमित और लगातार है, धैर्यशाली है, अत्यन्त सहिष्णु और प्रतिरोधक शक्ति वाला है (सहः जितम्) जो अन्ततः विजेता है (स्वः जितम्) जो अपनी शक्तियों का स्वामी है (गो जितम्) जो गऊओं आदि तथा अपनी इन्द्रियों का सर्वोच्च नियंत्रक है (सन्धना जितम्) जिसने सभी भिन्न-भिन्न सम्पदाओं (मानवता की और दिव्यता की) पर विजय प्राप्त की है (ईडयम्) सम्मान के योग्य, पूजा के योग्य (नाम) नाम (हव) मैं बुलाता हूँ, आह्वान करता हूँ, पूजा करता हूँ (इन्द्रम्) सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा (प्रियोः) प्रेम करने वाले (देवानाम्) दिव्यताओं के (शक्तियाँ और लोग) (भूयासम्) मैं बन सकूँ।

नोट :- अथर्ववेद 17.1.1 से 5 तक समान प्रकृति के मन्त्र हैं, केवल प्रार्थनाओं में भिन्नता है।

व्याख्या :-

इन्द्र, सर्वोच्च नियंत्रक के दिव्य लक्षण क्या हैं?

इन्द्र पुरुष क्या प्रार्थना करते हैं? (2)

इस सूक्त के देवता 'आदित्य' हैं जो 'इन्द्र' और 'विष्णु' की संयुक्त शक्तियाँ हैं। ब्रह्म ऋषि 'आदित्य' का आह्वान करते हैं। ब्रह्म ऋषि सदा के लिए ब्रह्म, परमात्मा में स्थापित हैं।

यह मन्त्र इन्द्र, सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा के नौ महान् और दिव्य लक्षणों को सूचीबद्ध करता है :-

1. (विषासहिम्) सर्वशक्तिमान्, सभी शक्तियों से ऊपर सर्वोच्च परास्त करने की शक्तियाँ
2. (सहमानम्) जिसमें काबू में करने का बल है
3. (सासहानम्) जो सभी विरोधाभासों और चुनौतियों को तुरन्त जीतने की शक्ति रखता है

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



4. (सहीयांसम्) जो अत्यन्त बलशाली है
5. (सहमानम्) जो नियमित और लगातार है, धैर्यशाली है, अत्यन्त सहिष्णु और प्रतिरोधक शक्ति वाला है
6. (सहः जितम्) जो अन्ततः विजेता है
7. (स्वः जितम्) जो अपनी शक्तियों का स्वामी है
8. (गो जितम्) जो गऊओं आदि तथा अपनी इन्द्रियों का सर्वोच्च नियंत्रक है
9. (सन्धना जितम्) जिसने सभी भिन्न-भिन्न सम्पदाओं (मानवता की और दिव्यता की) पर विजय प्राप्त की है

महान् और दिव्य ऋषि प्रार्थना करता है कि "मैं इन्द्र, सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा को बुलाता हूँ, आह्वान करता हूँ जो नाम सम्मान के योग्य है, पूजा के योग्य है। मैं दिव्यों का (शक्तियों और लोगों का) प्रिय बनूँ।"

यह मन्त्र हमें भी प्रेरित करता है कि हम सभी सर्वोच्च शक्तियों के लिए परमात्मा का सम्मान करें और उसके बाद पूर्ण कल्याण की प्रार्थना करें।

सूक्ति :- (प्रियः देवानाम् भूयासम् – अथर्ववेद 17.1.2) मैं दिव्यों का (शक्तियों और लोगों का) प्रिय बनूँ।

अथर्ववेद 17.1.3

विषासहिं सहमानं सासहानं सहीयांसम्।
सहमानं सहोजितं स्वर्जितं गोजितं सन्धनाजितम्।
ईडयं नाम हव इन्द्र प्रियः प्रजानां भूयासम्॥३॥

(विषासहिम्) सर्वशक्तिमान्, सभी शक्तियों से ऊपर सर्वोच्च परास्त करने की शक्तियाँ (सहमानम्) जिसमें काबू में करने का बल है (सासहानम्) जो सभी विरोधाभासों और चुनौतियों को तुरन्त जीतने की शक्ति रखता है (सहीयांसम्) जो अत्यन्त बलशाली है (सहमानम्) जो नियमित और लगातार है, धैर्यशाली है, अत्यन्त सहिष्णु और प्रतिरोधक शक्ति वाला है (सहः जितम्) जो अन्ततः विजेता है (स्वः जितम्) जो अपनी शक्तियों का स्वामी है (गो जितम्) जो गऊओं आदि तथा अपनी इन्द्रियों का सर्वोच्च नियंत्रक है (सन्धना जितम्) जिसने सभी भिन्न-भिन्न सम्पदाओं (मानवता की और दिव्यता की) पर विजय प्राप्त की है (ईडयम्) सम्मान के योग्य, पूजा के योग्य (नाम) नाम (हव) मैं बुलाता हूँ, आह्वान करता हूँ, पूजा करता हूँ (इन्द्रम्) सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा (प्रियः) प्रेम करने वाले (प्रजानाम्) लोगों का, प्रजाओं का, शिष्यों का (भूयासम्) मैं बन सकूँ।

नोट :- अथर्ववेद 17.1.1 से 5 तक समान प्रकृति के मन्त्र हैं, केवल प्रार्थनाओं में भिन्नता है।

व्याख्या :-

इन्द्र, सर्वोच्च नियंत्रक के दिव्य लक्षण क्या हैं?

इन्द्र पुरुष क्या प्रार्थना करते हैं? (3)

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM
Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.
For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



इस सूक्त के देवता 'आदित्य' हैं जो 'इन्द्र' और 'विष्णु' की संयुक्त शक्तियाँ हैं। ब्रह्म ऋषि 'आदित्य' का आह्वान करते हैं। ब्रह्म ऋषि सदा के लिए ब्रह्म, परमात्मा में स्थापित हैं।

यह मन्त्र इन्द्र, सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा के नौ महान् और दिव्य लक्षणों को सूचीबद्ध करता है :-

1. (विषासहिम्) सर्वशक्तिमान, सभी शक्तियों से ऊपर सर्वोच्च परास्त करने की शक्तियाँ
2. (सहमानम्) जिसमें काबू में करने का बल है
3. (सासहानम्) जो सभी विरोधाभासों और चुनौतियों को तुरन्त जीतने की शक्ति रखता है
4. (सहीयांसम्) जो अत्यन्त बलशाली है
5. (सहमानम्) जो नियमित और लगातार है, धैर्यशाली है, अत्यन्त सहिष्णु और प्रतिरोधक शक्ति वाला है
6. (सहः जितम्) जो अन्ततः विजेता है
7. (स्वः जितम्) जो अपनी शक्तियों का स्वामी है
8. (गो जितम्) जो गऊओं आदि तथा अपनी इन्द्रियों का सर्वोच्च नियंत्रक है
9. (सन्धना जितम्) जिसने सभी भिन्न-भिन्न सम्पदाओं (मानवता की और दिव्यता की) पर विजय प्राप्त की है

महान् और दिव्य ऋषि प्रार्थना करता है कि "मैं इन्द्र, सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा को बुलाता हूँ, आह्वान करता हूँ जो नाम सम्मान के योग्य है, पूजा के योग्य है। मैं लोगों का, प्रजाओं का, शिष्यों का प्रिय बनूँ।"

यह मन्त्र हमें भी प्रेरित करता है कि हम सभी सर्वोच्च शक्तियों के लिए परमात्मा का सम्मान करें और उसके बाद पूर्ण कल्याण की प्रार्थना करें।

सूक्ति :- (प्रियः प्रजानाम् भूयासम् - अथर्ववेद 17.1.3) मैं लोगों का, प्रजाओं का, शिष्यों का प्रिय बनूँ।

अथर्ववेद 17.1.4

विषासहिं सहमानं सासहानं सहीयांसम्।
सहमानं सहोजितं स्वर्जितं गोजितं सन्धनाजितम्।
ईडयं नाम हव इन्द्र प्रियः पशूनां भूयासम्॥४॥

(विषासहिम्) सर्वशक्तिमान, सभी शक्तियों से ऊपर सर्वोच्च परास्त करने की शक्तियाँ (सहमानम्) जिसमें काबू में करने का बल है (सासहानम्) जो सभी विरोधाभासों और चुनौतियों को तुरन्त जीतने की शक्ति रखता है (सहीयांसम्) जो अत्यन्त बलशाली है (सहमानम्) जो नियमित और लगातार है, धैर्यशाली है, अत्यन्त सहिष्णु और प्रतिरोधक शक्ति वाला है (सहः जितम्) जो अन्ततः विजेता है (स्वः जितम्) जो अपनी शक्तियों का स्वामी है (गो जितम्) जो गऊओं आदि तथा अपनी इन्द्रियों का सर्वोच्च नियंत्रक है (सन्धना जितम्) जिसने सभी भिन्न-भिन्न सम्पदाओं (मानवता की और दिव्यता की) पर विजय प्राप्त की है (ईडयम्) सम्मान के योग्य, पूजा के योग्य (नाम) नाम (हव) मैं बुलाता हूँ, आह्वान करता हूँ, पूजा करता हूँ (इन्द्रम्) सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा (प्रियः) प्रेम करने वाले (पशूनाम्) सभी जीवों का (भूयासम्) मैं बन सकूँ।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM
Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.
For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



नोट :- अथर्ववेद 17.1.1 से 5 तक समान प्रकृति के मन्त्र हैं, केवल प्रार्थनाओं में भिन्नता है।

व्याख्या :-

इन्द्र, सर्वोच्च नियंत्रक के दिव्य लक्षण क्या हैं?

इन्द्र पुरुष क्या प्रार्थना करते हैं? (4)

इस सूक्त के देवता 'आदित्य' हैं जो 'इन्द्र' और 'विष्णु' की संयुक्त शक्तियाँ हैं। ब्रह्म ऋषि 'आदित्य' का आह्वान करते हैं। ब्रह्म ऋषि सदा के लिए ब्रह्म, परमात्मा में स्थापित हैं।

यह मन्त्र इन्द्र, सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा के नौ महान् और दिव्य लक्षणों को सूचीबद्ध करता है :-

1. (विषासहिम्) सर्वशक्तिमान, सभी शक्तियों से ऊपर सर्वोच्च परास्त करने की शक्तियाँ
2. (सहमानम्) जिसमें काबू में करने का बल है
3. (सासहानम्) जो सभी विरोधाभासों और चुनौतियों को तुरन्त जीतने की शक्ति रखता है
4. (सहीयांसम्) जो अत्यन्त बलशाली है
5. (सहमानम्) जो नियमित और लगातार है, धैर्यशाली है, अत्यन्त सहिष्णु और प्रतिरोधक शक्ति वाला है
6. (सहः जितम्) जो अन्ततः विजेता है
7. (स्वः जितम्) जो अपनी शक्तियों का स्वामी है
8. (गो जितम्) जो गऊओं आदि तथा अपनी इन्द्रियों का सर्वोच्च नियंत्रक है
9. (सन्धना जितम्) जिसने सभी भिन्न-भिन्न सम्पदाओं (मानवता की और दिव्यता की) पर विजय प्राप्त की है

महान् और दिव्य ऋषि प्रार्थना करता है कि "मैं इन्द्र, सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा को बुलाता हूँ, आह्वान करता हूँ जो नाम सम्मान के योग्य है, पूजा के योग्य है। मैं सभी पशुओं का प्रिय बनूँ।"

यह मन्त्र हमें भी प्रेरित करता है कि हम सभी सर्वोच्च शक्तियों के लिए परमात्मा का सम्मान करें और उसके बाद पूर्ण कल्याण की प्रार्थना करें।

सूक्ति :- (प्रियः पशूनाम् भूयासम् – अथर्ववेद 17.1.4) मैं सभी पशुओं का प्रिय बनूँ।

अथर्ववेद 17.1.5

विषासहिं सहमानं सासहानं सहीयांसम्।

सहमानं सहोजितं स्वर्जितं गोजितं सन्धनाजितम्।

ईडयं नाम हव इन्द्र प्रियः समानानां भूयासम्॥5॥

(विषासहिम्) सर्वशक्तिमान, सभी शक्तियों से ऊपर सर्वोच्च परास्त करने की शक्तियाँ (सहमानम्) जिसमें काबू में करने का बल है (सासहानम्) जो सभी विरोधाभासों और चुनौतियों को तुरन्त जीतने की शक्ति रखता है (सहीयांसम्) जो अत्यन्त बलशाली है (सहमानम्) जो नियमित और लगातार है, धैर्यशाली है, अत्यन्त सहिष्णु और प्रतिरोधक शक्ति वाला है (सहः जितम्) जो अन्ततः विजेता है (स्वः जितम्) जो अपनी शक्तियों का स्वामी है (गो जितम्) जो गऊओं आदि तथा अपनी इन्द्रियों का

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



सर्वोच्च नियंत्रक है (सन्धना जितम्) जिसने सभी भिन्न-भिन्न सम्पदाओं (मानवता की और दिव्यता की) पर विजय प्राप्त की है (ईडयम्) सम्मान के योग्य, पूजा के योग्य (नाम) नाम (हव) मैं बुलाता हूँ, आह्वान करता हूँ, पूजा करता हूँ (इन्द्रम्) सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा (प्रियः) प्रेम करने वाले (समानानाम्) समान लोगों का (लक्षणों और शक्तियों में) (भूयासम्) मैं बन सकूँ।

नोट :- अथर्ववेद 17.1.1 से 5 तक समान प्रकृति के मन्त्र हैं, केवल प्रार्थनाओं में भिन्नता है।

व्याख्या :-

इन्द्र, सर्वोच्च नियंत्रक के दिव्य लक्षण क्या हैं?

इन्द्र पुरुष क्या प्रार्थना करते हैं? (5)

इस सूक्त के देवता 'आदित्य' हैं जो 'इन्द्र' और 'विष्णु' की संयुक्त शक्तियाँ हैं। ब्रह्म ऋषि 'आदित्य' का आह्वान करते हैं। ब्रह्म ऋषि सदा के लिए ब्रह्म, परमात्मा में स्थापित हैं।

यह मन्त्र इन्द्र, सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा के नौ महान् और दिव्य लक्षणों को सूचीबद्ध करता है :-

1. (विषासहिम्) सर्वशक्तिमान, सभी शक्तियों से ऊपर सर्वोच्च परास्त करने की शक्तियाँ
2. (सहमानम्) जिसमें काबू में करने का बल है
3. (सासहानम्) जो सभी विरोधाभासों और चुनौतियों को तुरन्त जीतने की शक्ति रखता है
4. (सहीयांसम्) जो अत्यन्त बलशाली है
5. (सहमानम्) जो नियमित और लगातार है, धैर्यशाली है, अत्यन्त सहिष्णु और प्रतिरोधक शक्ति वाला है
6. (सहः जितम्) जो अन्ततः विजेता है
7. (स्वः जितम्) जो अपनी शक्तियों का स्वामी है
8. (गो जितम्) जो गऊओं आदि तथा अपनी इन्द्रियों का सर्वोच्च नियंत्रक है
9. (सन्धना जितम्) जिसने सभी भिन्न-भिन्न सम्पदाओं (मानवता की और दिव्यता की) पर विजय प्राप्त की है

महान् और दिव्य ऋषि प्रार्थना करता है कि "मैं इन्द्र, सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा को बुलाता हूँ, आह्वान करता हूँ जो नाम सम्मान के योग्य है, पूजा के योग्य है। मैं समान लोगों (लक्षणों और शक्तियों में) का प्रिय बनूँ।"

यह मन्त्र हमें भी प्रेरित करता है कि हम सभी सर्वोच्च शक्तियों के लिए परमात्मा का सम्मान करें और उसके बाद पूर्ण कल्याण की प्रार्थना करें।

जीवन में सार्थकता :-

आत्मिक रूप से महान् नेता कैसे बनें?

यदि कोई श्रद्धालु भक्त, राजा या कोई भी मुखिया अथवा नेता इन्द्र बनना चाहता है तो उसे अपने जीवन में अपनी इन्द्रियों पर पूर्ण नियंत्रण लागू करते हुए और स्वयं को परमात्मा की इच्छा और योजना के प्रति समर्पित करते हुए उपरोक्त सभी नौ लक्षणों को विकसित करना चाहिए। ऐसा सफल श्रद्धालु दीर्घ और स्वस्थ आयु को धारण करते हुए, सभी दिव्य (शक्तियों और लोगों) अन्य सभी लोगों, सभी जीवों और सभी समान लोगों का प्रिय बनते हुए निश्चित रूप से एक अद्भुत नेतृत्व करने वाला व्यक्तित्व बन सकता है। ऐसा नेता सभी जीवों की आत्मा का नेता बन जाता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



सूक्ति :- (प्रियः समानानाम् भूयासम् – अथर्ववेद 17.1.5) मैं समान लोगों (लक्षणों और शक्तियों में) का प्रिय बनूँ।

अथर्ववेद 17.1.6

उदिह्युदिहि सूर्य वर्चसा माभ्युदिहि ।
द्विषंश्च मह्यं रध्यतु मा चाहं द्विषते रधं तवेद्विष्णो बहुधा वीर्याणि ।
त्वं नः पृणीहि पशुभिर्विश्वरूपैः सुधायां मा धेहि परमे व्योमन् ॥ 6 ॥

(उत् इहि) उठो, जागो (उत् इहि) उठो, जागो (सूर्य) सूर्य, प्रकाश, ताप और ऊर्जा का स्रोत (वर्चसा) वैभव (मा) मेरे लिए (अभ्युदिहि) प्रकाशवान्, उदय होता हुआ (द्विषम्) शत्रुतापूर्ण (आन्तरिक या बाह्य) (च) और (मह्यम्) मेरे अन्दर (रध्यतु) नियंत्रण (मा) नहीं (च) और (अहम्) मैं (द्विषते) शत्रुओं का (रधम्) नियंत्रण (तव) आप (इत्) केवल (विष्णो) सर्वव्यापक, परमात्मा (बहुधा) बहुत सारे, अनेक रूपों में (वीर्याणि) बहादुरी, शक्तियाँ, गतिविधियाँ (त्वम्) आप (नः) हमें (पृणीहि) पूर्ण, आशीर्वाद (पशुभिः) सभी जीवों के साथ (विश्व रूपैः) सभी रूपों वाला (सुधायाम्) पूर्ण पोषण में, आनन्द में, अमृत में (मा) मेरे (धेहि) प्रदान करो, स्थापित करो (परमे व्योमन्) स्वयं सर्वोच्च आकाश में स्थापित, अस्तित्वमय भौतिक संसार से परे, क्वांटम (मापने योग्य अस्तित्व का निर्माता) ।

व्याख्या :-

हमारे उत्थान के लिए कौन उदय होता है?

हमारे प्रकाशित होने के लिए कौन प्रकाशित होता है?

हम शत्रुओं के साथ कैसे निपटें?

हमारे जीवन को आनन्द से पूर्ण कौन कर सकता है?

क्वांटम की तुलना में परमे व्योमन् कौन है?

सूर्य, प्रकाश, ताप और ऊर्जा के स्रोत! हमें जगाने के लिए और हमें प्रकाशित करने के लिए वैभव के साथ उठो जागो-उठो जागो ।

जो शत्रुतापूर्ण या ईर्ष्यालु हैं (आन्तरिक या बाह्य) वे मेरे नियंत्रण में रहें, मैं उन शत्रुओं, ईर्ष्यालुओं या विरोधियों के नियंत्रण में न रहें ।

‘विष्णु’, सर्वव्यापक, परमात्मा केवल आपकी साहसी शक्तियाँ और गतिविधियाँ बहुत सारी और अनेकों रूपों वाली है ।

आप, विश्वरूपा, अनेकों रूपों वाले, कृपया सभी जीवों के साथ और सभी माध्यमों के साथ हमें आशीर्वाद दो ।

कृपया मेरे अन्दर पूर्ण पोषण, आनन्द और प्रफुल्लित करने वाला अमृत प्रदान करो और स्थापित करो । परमे व्योमन् अर्थात् स्वयं सर्वोच्च आकाश में स्थापित, अस्तित्वमय भौतिक संसार से परे, आधुनिक विद्वानों की क्वांटम अवधारणा से बहुत अधिक है ।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



जीवन में सार्थकता :-

भौतिक विज्ञान के सदर्भ में आध्यात्मिक विज्ञान क्या है?

परमे व्योमन् ऊर्जा का तथा सारी सृष्टि अर्थात् व्योम अर्थात् समूचे ब्रह्माण्ड के अस्तित्वमय संसार का स्रोत है।

परमे व्योमन् के लिए समय तथा स्थान की कोई सीमा नहीं है। वह असीम समय और स्थान परमे व्योमन् है। सभी व्याप्त ऊर्जाओं का सूक्ष्म रूप, सभी जीवों और तत्वों से जुड़ा हुआ, अध्यात्मवादियों के अनुसार वह परमात्मा है और भौतिक वैज्ञानिकों के अनुसार यह क्वांटम है। यह वास्तव में 'विश्वरूपा' है, जो सभी रूपों वाला है। क्वांटम अर्थात् मापने योग्य अस्तित्वमय संसार का तथा समूची दृश्यमान सृष्टि का निर्माता, ऊर्जा के एक अदृश्य स्रोत के साथ जुड़ा है। परमे व्योमन् से सम्पर्क की अनुभूति प्राप्त करने के लिए क्वांटम की अवधारणा को आधुनिक शब्द के रूप में प्रयोग किया जा सकता है।

उस ऊर्जा के सूक्ष्म रूप के साथ अपने ही भीतर केवल एक श्रद्धालु भक्त ही सम्पर्क स्थापित कर सकता है। ऐसा सफल श्रद्धालु एक अनुभवी आध्यात्मिक वैज्ञानिक या अनुभूति प्राप्त व्यक्ति बन जाता है।

समाधि से उठकर एक सन्त दावा करता है कि उसने एक परमाणु में सारा संसार देख लिया है और जो कुछ भी इस संसार में विद्यमान है वह सब कुछ ऊर्जा के माध्यम से परस्पर जुड़ा हुआ है। इसी सम्पर्क के माध्यम से एक मन में उठने वाले विचार दूसरे व्यक्ति के मन में पहुँच जाते हैं।

सूक्ति 1 :- (उत् इहि उत् इहि सूर्य वर्चसा मा अभ्युदिहि – अथर्ववेद 17.1.6 और 17.1.7) सूर्य, प्रकाश, ताप और ऊर्जा के स्रोत! हमें जगाने के लिए और हमें प्रकाशित करने के लिए वैभव के साथ उठो जागो-उठो जागो।

सूक्ति 2 :- (द्विषम् च मह्यम् रध्यतु मा च अहम् द्विषते रधम् – अथर्ववेद 17.1.6) जो शत्रुतापूर्ण या ईर्ष्यालु हैं (आन्तरिक या बाह्य) वे मेरे नियंत्रण में रहें, मैं उन शत्रुओं, ईर्ष्यालुओं या विरोधियों के नियंत्रण में न रहें।

सूक्ति 3 :- (तव इत् विष्णो बहुधा वीर्याणि – अथर्ववेद 17.1.6 से 19 तथा 24) 'विष्णु', सर्वव्यापक, परमात्मा केवल आपकी साहसी शक्तियाँ और गतिविधियाँ बहुत सारी और अनेकों रूपों वाली है।

सूक्ति 4 :- (त्वम् नः पृणीहि पशुभिः विश्व रूपैः – अथर्ववेद 17.1.6 से 19 तथा 24) आप, विश्वरूपा, अनेकों रूपों वाले, कृपया सभी जीवों के साथ और सभी माध्यमों के साथ हमें आशीर्वाद दो।

सूक्ति 5 :- (सुधायाम् मा धेहि – अथर्ववेद 17.1.6 से 19 तथा 24) कृपया मेरे अन्दर पूर्ण पोषण, आनन्द और प्रफुल्लित करने वाला अमृत प्रदान करो और स्थापित करो।

सूक्ति 6 :- (परमे व्योमन् – अथर्ववेद 17.1.6 से 19 तथा 24) परमे व्योमन् अर्थात् स्वयं सर्वोच्च आकाश में स्थापित, अस्तित्वमय भौतिक संसार से परे, आधुनिक विद्वानों की क्वांटम अवधारणा से बहुत अधिक है।

अथर्ववेद 17.1.7

उदिह्युदिहि सूर्य वर्चसा माभ्युदिहि।

यांश्च पश्यामि यांश्च न तेषु मा सुमतिं कृधि तवेद्विष्णो बहुधा वीर्याणि।

त्वं नः पृणीहि पशुभिर्विश्वरूपैः सुधायां मा धेहि परमे व्योमन्॥७॥

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



(उत् इहि) उठो, जागो (उत् इहि) उठो, जागो (सूर्य) सूर्य, प्रकाश, ताप और ऊर्जा का स्रोत (वर्चसा) वैभव (मा) मेरे लिए (अभ्युदिहि) प्रकाशवान, उदय होता हुआ (याम्) जिस किसी को भी (च) और (पय्यामि) मैं देखता हूँ (याम्) जिस किसी को भी (च) और (न) नहीं (तेषु) उनके बीच (मा) मेरे (सुमतिम्) उत्तम मन वाले, कल्याणकारी मन वाले (कृधि) बना दो (तव) आप (इत्) केवल (विष्णो) सर्वव्यापक, परमात्मा (बहुधा) बहुत सारे, अनेक रूपों में (वीर्याणि) बहादुरी, शक्तियाँ, गतिविधियाँ (त्वम्) आप (नः) हमें (पृणीहि) पूर्ण, आशीर्वाद (पशुभिः) सभी जीवों के साथ (विश्व रूपैः) सभी रूपों वाला (सुधायाम्) पूर्ण पोषण में, आनन्द में, अमृत में (मा) मेरे (धेहि) प्रदान करो, स्थापित करो (परमे व्योमन्) स्वयं सर्वोच्च आकाश में स्थापित, अस्तित्वमय भौतिक संसार से परे, क्वांटम (मापने योग्य अस्तित्व का निर्माता)।

व्याख्या :-

हम अपने निकट या दूर के लोगों से कैसे व्यवहार करें?

सूर्य, प्रकाश, ताप और ऊर्जा के स्रोत! हमें जगाने के लिए और हमें प्रकाशित करने के लिए वैभव के साथ उठो जागो—उठो जागो।

जिस किसी को भी मैं देखूँ या जिस किसी को मैं ना देखूँ, कृपया उन सबके मध्य मुझे सर्वोत्तम मन वाला तथा कल्याणकारी मन वाला बना दो।

‘विष्णु’, सर्वव्यापक, परमात्मा केवल आपकी साहसी शक्तियाँ और गतिविधियाँ बहुत सारी और अनेकों रूपों वाली है।

आप, विश्वरूपा, अनेकों रूपों वाले, कृपया सभी जीवों के साथ और सभी माध्यमों के साथ हमें आशीर्वाद दो।

कृपया मेरे अन्दर पूर्ण पोषण, आनन्द और प्रफुल्लित करने वाला अमृत प्रदान करो और स्थापित करो। परमे व्योमन् अर्थात् स्वयं सर्वोच्च आकाश में स्थापित, अस्तित्वमय भौतिक संसार से परे, आधुनिक विद्वानों की क्वांटम अवधारणा से बहुत अधिक है।

सूक्ति :- (याम् च न तेषु मा सुमतिम् कृधि – अथर्ववेद 17.1.7) जिस किसी को भी मैं देखूँ या जिस किसी को मैं ना देखूँ, कृपया उन सबके मध्य मुझे सर्वोत्तम मन वाला तथा कल्याणकारी मन वाला बना दो।

अथर्ववेद 17.1.8

मा त्वा दभन्त्सलिले अप्सवन्तार्ये पाशिन उपतिष्ठन्त्यत्र।

हित्वाशस्तिं दिवमारुक्ष एतां स नो मृड सुमतौ ते स्याम तवेद्विष्णो बहुधा वीर्याणि।

त्वं नः पृणीहि पशुभिर्विश्वरूपैः सुधायां मा धेहि परमे व्योमन्॥४॥

(मा) नहीं (त्वा) आपको (दभन्) दबाना, उल्लंघन करना (सलिले) अन्तरिक्ष में, आकाश में, समुद्र में (अप्सु अन्तः) जलों के अन्दर, कर्मों में (ये) ये (पाशिनः) बन्धन और सांप, बाधाएँ (उपतिष्ठन्ति) विद्यमान (अत्र) यहाँ (हित्वा) त्यागते हुए (अशस्तिम्) बदनाम कार्य और विचार (दिवम्) दिव्य स्तर पर, स्वर्ग में (आरुक्ष) आपका उत्थान होता है (एताम्) इसमें (सः) वह, आप (नः) हमें (मृड) प्रसन्न रखो, सुविधाजनक,

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



शांति में (सुमतौ) सर्वोत्तम मन, कल्याण करने वाला मन (ते) आपका (स्याम) हम हों (तव) आप (इत्) केवल (विष्णो) सर्वव्यापक, परमात्मा (बहुधा) बहुत सारे, अनेक रूपों में (वीर्याणि) बहादुरी, शक्तियाँ, गतिविधियाँ (त्वम्) आप (नः) हमें (पृणीहि) पूर्ण, आशीर्वाद (पशुभिः) सभी जीवों के साथ (विश्व रूपैः) सभी रूपों वाला (सुधायाम्) पूर्ण पोषण में, आनन्द में, अमृत में (मा) मेरे (धेहि) प्रदान करो, स्थापित करो (परमे व्योमन्) स्वयं सर्वोच्च आकाश में स्थापित, अस्तित्वमय भौतिक संसार से परे, क्वांटम (मापने योग्य अस्तित्व का निर्माता)।

व्याख्या :-

परमात्मा किस प्रकार सांसारिक बन्धनों और सर्पों से अहिंसित और बिना बाधा के होता है?

हम प्रसन्नता तथा शांति में किस प्रकार रह सकते हैं?

अथर्ववेद 17.1.6 से 19 तथा 24वें मन्त्र परमात्मा के तीन आयामों को सम्बोधित करते हैं – विष्णु, विश्वरूपा तथा परमे व्योमन्।

अन्तरिक्ष, आकाश और समुद्र के उच्च स्थान पर स्थापित होते हुए यहाँ (सांसारिक स्तर पर) विद्यमान बन्धन और सर्प अर्थात् पाशिनः आपको जलों में या कर्मों में दबा नहीं पाते और उल्लंघन भी नहीं कर पाते। बदनाम कार्यों और विचारों का त्याग करके आप आकाश में दिव्य स्तर पर उदय हो चुके हो, उत्थान प्राप्त कर चुके हो।

वह आप (परमात्मा) कृपया हमें प्रसन्न, सुखों में और शांति में रखें। हम आपके सर्वोत्तम और कल्याणकारी मन में रह सकें।

‘विष्णु’, सर्वव्यापक, परमात्मा केवल आपकी साहसी शक्तियाँ और गतिविधियाँ बहुत सारी और अनेकों रूपों वाली है।

आप, विश्वरूपा, अनेकों रूपों वाले, कृपया सभी जीवों के साथ और सभी माध्यमों के साथ हमें आशीर्वाद दो।

कृपया मेरे अन्दर पूर्ण पोषण, आनन्द और प्रफुल्लित करने वाला अमृत प्रदान करो और स्थापित करो। परमे व्योमन् अर्थात् स्वयं सर्वोच्च आकाश में स्थापित, अस्तित्वमय भौतिक संसार से परे, आधुनिक विद्वानों की क्वांटम अवधारणा से बहुत अधिक है।

जीवन में सार्थकता :-

हम किस प्रकार सांसारिक बन्धनों और सर्पों से अनियंत्रित तथा बिना बाधा के रह सकते हैं?

एक बार जब हम परमात्मा से प्रेरित होकर उसके साथ उच्च चेतना के स्तर पर जीने लगते हैं तो हमें परमात्मा के अस्तित्व के तीन आयामों को प्रतिक्षण मन में रखना चाहिए और उसकी प्रशंसा और महिमागान करते हुए यह प्रार्थना और प्रयास करते रहना चाहिए कि हम भी इन तीन आयामों में जीवन जियें – 1. सबके कल्याण की प्रार्थना और इच्छा करते हुए समाज में व्याप्त रहें, 2. यज्ञ कार्यों की तरह सबके लिए अनेक प्रकार के कल्याणकारी कार्य और विचार सम्पन्न करें तथा 3. अपने अन्दर परमात्मा के रूप को देखते हुए तथा उसका सहचर समझते हुए, ब्रह्मरन्ध्र पर ध्यान लगाते हुए, अपने अन्दर उच्च चेतना के स्तर पर जियें।

केवल इस प्रकार से ही हम भी सांसारिक बन्धनों और सर्पों से अहिंसित हो सकते हैं तथा प्रसन्न और शान्त रह सकते हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



सूक्ति 1 :- (मा त्वा दभन् सलिले अप्सु अन्तः ये पाशिनः उपतिष्ठन्ति अत्र — अथर्ववेद 17.1.8)
अन्तरिक्ष, आकाश और समुद्र के उच्च स्थान पर स्थापित होते हुए यहाँ (सांसारिक स्तर पर) विद्यमान बन्धन और सर्प अर्थात् पाशिनः आपको जलों में या कर्मों में दबा नहीं पाते और उल्लंघन भी नहीं कर पाते।

अथर्ववेद 17.1.9

त्वं न इन्द्र महते सौभगायादब्धेभिः परि पाह्यत्तुभिस्तवेद्विष्णो बहुधा वीर्याणि ।
त्वं नः पृणीहि पशुभिर्विश्वरूपैः सुधायां मा धेहि परमे व्योमन् ।।9।।

(त्वम्) आप (नः) हमें (इन्द्र) सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा (महते) महान् के लिए (सौभगाय) उत्तम सौभाग्य (अदब्धेभिः) अहिंसनीय, जिसको हानि न पहुँचाई जा सके (परि पाहि) सभी दिशाओं से, सभी प्रकार से सुरक्षित करता है (अत्तुभिः) किरणों के साथ (प्रकाश, शक्ति की) (तव) आप (इत्) केवल (विष्णो) सर्वव्यापक, परमात्मा (बहुधा) बहुत सारे, अनेक रूपों में (वीर्याणि) बहादुरी, शक्तियाँ, गतिविधियाँ (त्वम्) आप (नः) हमें (पृणीहि) पूर्ण, आशीर्वाद (पशुभिः) सभी जीवों के साथ (विश्व रूपैः) सभी रूपों वाला (सुधायाम्) पूर्ण पोषण में, आनन्द में, अमृत में (मा) मेरे (धेहि) प्रदान करो, स्थापित करो (परमे व्योमन्) स्वयं सर्वोच्च आकाश में स्थापित, अस्तित्वमय भौतिक संसार से परे, क्वांटम (मापने योग्य अस्तित्व का निर्माता)।

व्याख्या :-

उत्तम सौभाग्य के लिए किसको प्रार्थना करें?

आप, इन्द्र, सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा, कृपया हमें सभी दिशाओं से और सभी प्रकार से अपनी अहिंसनीय किरणों (प्रकाश और शक्ति की किरणों) के द्वारा हमारे महान् और उत्तम सौभाग्य के लिए हमारी रक्षा करें।

‘विष्णु’, सर्वव्यापक, परमात्मा केवल आपकी साहसी शक्तियाँ और गतिविधियाँ बहुत सारी और अनेकों रूपों वाली है।

आप, विश्वरूपा, अनेकों रूपों वाले, कृपया सभी जीवों के साथ और सभी माध्यमों के साथ हमें आशीर्वाद दो।

कृपया मेरे अन्दर पूर्ण पोषण, आनन्द और प्रफुल्लित करने वाला अमृत प्रदान करो और स्थापित करो। परमे व्योमन् अर्थात् स्वयं सर्वोच्च आकाश में स्थापित, अस्तित्वमय भौतिक संसार से परे, आधुनिक विद्वानों की क्वांटम अवधारणा से बहुत अधिक है।

सूक्ति :- (त्वम् नः इन्द्र महते सौभगाय अदब्धेभिः परि पाहि अत्तुभिः — अथर्ववेद 17.1.9) आप, इन्द्र, सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा, कृपया हमें सभी दिशाओं से और सभी प्रकार से अपनी अहिंसनीय किरणों (प्रकाश और शक्ति की किरणों) के द्वारा हमारे महान् और उत्तम सौभाग्य के लिए हमारी रक्षा करें।

अथर्ववेद 17.1.10

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM
Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.
For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



त्वं न इन्द्रोतिभिः शिवाभिः शन्तमो भव ।
 आरोहंस्त्रिदिवं दिवो गृणानः सोमपीतये प्रियधामा स्वस्तये तवेद्विष्णो बहुधा वीर्याणि ।
 त्वं नः पृणीहि पशुभिर्विश्वरूपैः सुधायां मा धेहि परमे व्योमन् ॥ १० ॥

(त्वम्) आप (नः) हमारे (इन्द्रः) सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा (उतिभिः) आपके संरक्षण के साथ (शिवाभिः) आपके कल्याण के साथ (शन्तमः) शान्ति, प्रसन्नता और कल्याण के देने वाले (भव) होओ (आरोहम्) ऊपर की तरफ बढ़ते हुए (त्रिदिवम्) दिव्य प्रकाश के तीन स्तरों से ऊपर (देवता, मनुष्य और राक्षस; सत्व, रज और तम; देवपूजा, संगतिकरण (सामाजिक एकता) तथा दान; शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक; जागृत, स्वप्न और सुशुप्ति; ज्ञान मार्ग, कर्म मार्ग और उपासना; इलेक्ट्रॉन अर्थात् तटस्थ प्रभाव, प्रोट्रॉन अर्थात् सकारात्मक प्रभाव, न्यूट्रॉन अर्थात् नकारात्मक प्रभाव; ईश्वर, जीव और प्रकृति) (दिवः) दिव्य, प्रकाशित (गृणानः) गाते हुए, महिमाएँ (सोमपीतये) सोम अर्थात् शुभ गुणों, दिव्य ज्ञान और औषधियों के सेवन और संरक्षण के लिए (प्रियधामा) प्रिय लक्ष्य के लिए (स्वस्तये) कल्याण के लिए (तव) आप (इत्) केवल (विष्णो) सर्वव्यापक, परमात्मा (बहुधा) बहुत सारे, अनेक रूपों में (वीर्याणि) बहादुरी, शक्तियाँ, गतिविधियाँ (त्वम्) आप (नः) हमें (पृणीहि) पूर्ण, आशीर्वाद (पशुभिः) सभी जीवों के साथ (विश्व रूपैः) सभी रूपों वाला (सुधायाम्) पूर्ण पोषण में, आनन्द में, अमृत में (मा) मेरे (धेहि) प्रदान करो, स्थापित करो (परमे व्योमन्) स्वयं सर्वोच्च आकाश में स्थापित, अस्तित्वमय भौतिक संसार से परे, क्वांटम (मापने योग्य अस्तित्व का निर्माता) ।

व्याख्या :-

हमे कौन से तीन स्तरों से ऊपर उठना चाहिए?

इन्द्र, सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा! आप कृपया अपने संरक्षण और कल्याण सहित शांति, प्रसन्नता और कल्याण के देने वाले बनों ।

आप दिव्य प्रकाश के तीन स्तरों से ऊपर उठ चुके हो (देवता, मनुष्य और राक्षस; सत्व, रज और तम; देवपूजा, संगतिकरण (सामाजिक एकता) तथा दान; शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक; जागृत, स्वप्न और सुशुप्ति; ज्ञान मार्ग, कर्म मार्ग और उपासना; इलेक्ट्रॉन अर्थात् तटस्थ प्रभाव, प्रोट्रॉन अर्थात् सकारात्मक प्रभाव, न्यूट्रॉन अर्थात् नकारात्मक प्रभाव; ईश्वर, जीव और प्रकृति) ।

कृपया मुझे भी अपने प्रिय लक्ष्य के लिए तथा अपने कल्याण के लिए सोम अर्थात् शुभ गुणों, दिव्य ज्ञान और औषधियों का सेवन तथा संरक्षण करते हुए दिव्य प्रकाश की महिमा गाने दो ।

‘विष्णु’, सर्वव्यापक, परमात्मा केवल आपकी साहसी शक्तियाँ और गतिविधियाँ बहुत सारी और अनेकों रूपों वाली है ।

आप, विश्वरूपा, अनेकों रूपों वाले, कृपया सभी जीवों के साथ और सभी माध्यमों के साथ हमें आशीर्वाद दो ।

कृपया मेरे अन्दर पूर्ण पोषण, आनन्द और प्रफुल्लित करने वाला अमृत प्रदान करो और स्थापित करो । परमे व्योमन् अर्थात् स्वयं सर्वोच्च आकाश में स्थापित, अस्तित्वमय भौतिक संसार से परे, आधुनिक विद्वानों की क्वांटम अवधारणा से बहुत अधिक है ।

जीवन में सार्थकता :-

हमारा प्रिय लक्ष्य क्या है?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



हमारा प्रिय लक्ष्य परमे व्योमन् अर्थात् परमात्मा की अनुभूति प्राप्त करना है। उस लक्ष्य की अनुभूति के लिए एक श्रद्धालु को हर प्रकार से, हर अवस्था में और हर रूप में सृष्टि के तीन स्तरों से ऊपर उठकर जीना चाहिए।

सूक्ति :- (आरोहम् त्रिदिवम् दिवः गृणानः सोमपीतये प्रियधामा स्वस्तये – अथर्ववेद 17.1.10) आप दिव्य प्रकाश के तीन स्तरों से ऊपर उठ चुके हो (देवता, मनुष्य और राक्षस; सत्व, रज और तम; देवपूजा, संगतिकरण (सामाजिक एकता) तथा दान; शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक; जागृत, स्वप्न और सुशुप्ति; ज्ञान मार्ग, कर्म मार्ग और उपासना; इलेक्ट्रॉन अर्थात् तटस्थ प्रभाव, प्रोट्रॉन अर्थात् सकारात्मक प्रभाव, न्यूट्रॉन अर्थात् नकारात्मक प्रभाव; ईश्वर, जीव और प्रकृति)।

कृपया मुझे भी अपने प्रिय लक्ष्य के लिए तथा अपने कल्याण के लिए सोम अर्थात् शुभ गुणों, दिव्य ज्ञान और औषधियों का सेवन तथा संरक्षण करते हुए दिव्य प्रकाश की महिमा गाने दो।

अथर्ववेद 17.1.11

त्वमिन्द्रासि विश्वजित्सर्ववित्पुरुहूतस्त्वमिन्द्र।

त्वमिन्द्रेमं सुहवं स्तोममेरयस्व स नो मृड सुमतौ ते स्याम तवेद्विष्णो बहुधा वीर्याणि।

त्वं नः पृणीहि पशुभिर्विश्वरूपैः सुधायां मा धेहि परमे व्योमन्॥ 11॥

(त्वम्) आप (इन्द्र) सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा (असि) हो (विश्वजित्) समूची सृष्टि के एक मात्र विजेता स्वामी (सर्ववित्) सर्वज्ञाता (पुरुहूतः) सबके द्वारा आह्वान किये गये और सम्मान किये गये (त्वम्) आप (इन्द्र) सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा (त्वम्) आप (इन्द्र) सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा (इमम्) यह (सुहवम्) सुनने में आकर्षक तथा उत्तम (स्तोमम्) वैदिक वाणियों (आ) सभी दिशाओं से (एरयस्व) प्रेरित करो, प्राप्त करवाओ (सः) वह, आप (नः) हमें (मृड) प्रसन्न, सुखी, शान्त रखो (सुमतौ) सर्वोत्तम मन, कल्याणकारी मन (ते) आपके (स्याम) हम होवें (तव) आप (इत्) केवल (विष्णो) सर्वव्यापक, परमात्मा (बहुधा) बहुत सारे, अनेक रूपों में (वीर्याणि) बहादुरी, शक्तियाँ, गतिविधियाँ (त्वम्) आप (नः) हमें (पृणीहि) पूर्ण, आशीर्वाद (पशुभिः) सभी जीवों के साथ (विश्व रूपैः) सभी रूपों वाला (सुधायाम्) पूर्ण पोषण में, आनन्द में, अमृत में (मा) मेरे (धेहि) प्रदान करो, स्थापित करो (परमे व्योमन्) स्वयं सर्वोच्च आकाश में स्थापित, अस्तित्वमय भौतिक संसार से परे, क्वांटम (मापने योग्य अस्तित्व का निर्माता)।

व्याख्या :-

हमारे अन्दर सभी ज्ञान कौन प्रेरित करता है?

इन्द्र, सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा आप इस सृष्टि के एक मात्र विजेता स्वामी हो, सर्वज्ञाता हो, सबके द्वारा आह्वान और सम्मानित किये जाते हो; इन्द्र, सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा, आप वैदिक वाणियों से हमें प्रेरित करते हो और हमें प्राप्त करवाते हो जो सभी दिशाओं से सुनने में आकर्षक और उत्तम है। वह आप (परमात्मा) कृपया हमें प्रसन्न, सुखी और शान्त रखो। हम आपके सर्वोत्तम और कल्याणकारी मन वाले होवें।

‘विष्णु’, सर्वव्यापक, परमात्मा केवल आपकी साहसी शक्तियाँ और गतिविधियाँ बहुत सारी और अनेकों रूपों वाली है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



आप, विश्वरूपा, अनेकों रूपों वाले, कृपया सभी जीवों के साथ और सभी माध्यमों के साथ हमें आशीर्वाद दो।

कृपया मेरे अन्दर पूर्ण पोषण, आनन्द और प्रफुल्लित करने वाला अमृत प्रदान करो और स्थापित करो। परमे व्योमन् अर्थात् स्वयं सर्वोच्च आकाश में स्थापित, अस्तित्वमय भौतिक संसार से परे, आधुनिक विद्वानों की क्वांटम अवधारणा से बहुत अधिक है।

जीवन में सार्थकता :-

मानव जीवन का लक्ष्य परमात्मा क्यों है?

इन्द्र, सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा, विष्णु, विश्वरूप तथा परमे व्योमन् सभी मनुष्यों का लक्ष्य है, क्योंकि सारी सृष्टि में हर प्रकार से वह सर्वोच्च है।

हर कोई जीवन में ऊँचा उठना चाहता है। क्योंकि परमात्मा इस सृष्टि के सभी पहलुओं में सर्वोच्च है, इसलिए प्रत्येक मनुष्य को उस सर्वोच्च शक्ति का लक्ष्य प्राप्त करने के लिए अथक प्रयास करना चाहिए जो समय और स्थान में असीम है।

आज के युग में मनुष्यों का भौतिक वस्तुओं और अहंकार में सर्वोच्च बनने का प्रयास एक गम्भीर दोष और भ्रांति है, क्योंकि कोई भी उस सर्वोच्चता को प्राप्त नहीं कर सकता। जो कुछ भी कोई प्राप्त करता है वह नाशवान् है और मृत्यु जैसी अनिश्चित घटना के आने पर पीछे छूट जाने योग्य है और यह मृत्यु किसी भी मनुष्य के नियंत्रण में नहीं है चाहे उसकी भौतिक सम्पदा और शक्तियाँ कितनी ही बड़ी क्यों न हों।

सूक्ति :- (त्वम् इन्द्र असि विश्वजित् सर्ववित् पुरुहूतः – अथर्ववेद 17.1.11) इन्द्र, सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा आप इस सृष्टि के एक मात्र विजेता स्वामी हो, सर्वज्ञाता हो, सबके द्वारा आह्वान और सम्मानित किये जाते हो।

अथर्ववेद 17.1.12

अदब्धो दिवि पृथिव्यामुतासि न त आपुर्महिमानमन्तरिक्षे।

अदब्धेन ब्रह्मणा वावृधानः स त्वं न इन्द्र दिवि षंच्छर्म यच्छ तवेद्विष्णो बहुधा वीर्याणि।

त्वं नः पृणीहि पशुभिर्विश्वरूपैः सुधायां मा धेहि परमे व्योमन्॥ 12॥

(अदब्धः) अहिंसनीय (दिवि) स्वर्ग के आकाश में (पृथिव्याम्) पृथ्वी पर (उत्) और (असि) हो (न) नहीं (ते) आपके (आपुः) प्रतियोगी, जानना (महिमानम्) महिमा और वैभव (अन्तरिक्षे) अन्तरिक्ष में (अदब्धेन) अहिंसा के साथ (ब्रह्मणा) दिव्य ज्ञान (परमात्मा के बारे में) (वावृधानः) अत्यन्त प्रगतिशील (सः) वह (त्वम्) आप (नः) हमें (इन्द्र) सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा (दिवि) विद्यमासन (षर्मा) सुविधाएँ (यच्छ) उपलब्ध कराता है (तव) आप (इत्) केवल (विष्णो) सर्वव्यापक, परमात्मा (बहुधा) बहुत सारे, अनेक रूपों में (वीर्याणि) बहादुरी, शक्तियाँ, गतिविधियाँ (त्वम्) आप (नः) हमें (पृणीहि) पूर्ण, आशीर्वाद (पशुभिः) सभी जीवों के साथ (विश्व रूपैः) सभी रूपों वाला (सुधायाम्) पूर्ण पोषण में, आनन्द में, अमृत में (मा) मेरे (धेहि) प्रदान करो, स्थापित करो (परमे व्योमन्) स्वयं सर्वोच्च आकाश में स्थापित, अस्तित्वमय भौतिक संसार से परे, क्वांटम (मापने योग्य अस्तित्व का निर्माता)।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



व्याख्या :-

इस ब्रह्माण्ड में कौन अहिंसनीय है?

किसकी महिमा न तो जानी जा सकती है और न ही उससे प्रतियोगिता हो सकती है?

इन्द्र, सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा आप स्वर्ग आकाश में और भूमि पर अहिंसनीय हो। कोई भी व्यक्ति महिमा और वैभव में न तो आपका मुकाबला कर सकता है और न ही उसे जान सकता है। वह आप इन्द्र, स्वर्ग आकाश में विद्यमान, दिव्य ज्ञान के साथ अत्यन्त प्रगतिशील हो, आप अहिंसनीय हो और हमें सुख उपलब्ध कराते हो।

‘विष्णु’, सर्वव्यापक, परमात्मा केवल आपकी साहसी शक्तियाँ और गतिविधियाँ बहुत सारी और अनेकों रूपों वाली है।

आप, विश्वरूपा, अनेकों रूपों वाले, कृपया सभी जीवों के साथ और सभी माध्यमों के साथ हमें आशीर्वाद दो।

कृपया मेरे अन्दर पूर्ण पोषण, आनन्द और प्रफुल्लित करने वाला अमृत प्रदान करो और स्थापित करो। परमे व्योमन् अर्थात् स्वयं सर्वोच्च आकाश में स्थापित, अस्तित्वमय भौतिक संसार से परे, आधुनिक विद्वानों की क्वांटम अवधारणा से बहुत अधिक है।

जीवन में सार्थकता :-

सच्चा श्रद्धालु कौन है?

सच्चा श्रद्धालु कैसे जीता है?

एक सच्चा श्रद्धालु, जो सर्वोच्च शक्ति, परमात्मा के सम्पर्क में रहता है, वह भी अहिंसनीय हो जाता है अर्थात् शारीरिक स्तर पर, भौतिक इच्छाओं के लिए और मानसिक स्तर पर संवेदनाओं के लिए नहीं मरता। परमात्मा, जो परमे व्योमन् है, अपने सच्चे श्रद्धालुओं को उसी स्तर की उच्च चेतना का जीवन प्रदान करते हैं। एक सच्चे श्रद्धालु का जीवन परमात्मा की दिव्यताओं की तरह तरंगित होता है। वह भौतिक वस्तुओं के बिना भी आनन्द में रहता है। वह अलग और एकांकी जीवन व्यतीत करता है, क्योंकि वह अन्दर ही संतुष्ट है।

सूक्ति :- (न ते आपुः महिमानम् — अथर्ववेद 17.1.12) कोई भी व्यक्ति महिमा और वैभव में न तो आपका मुकाबला कर सकता है और न ही उसे जान सकता है।

अथर्ववेद 17.1.13

या त इन्द्र तनूरप्सु या पृथिव्यां यान्तरग्नौ या त इन्द्र पवमाने स्वर्विदि ।
ययेन्द्र तन्वा३न्तरिक्षं व्यापिथ तया न इन्द्र तन्वा३ शर्म यच्छ तवेद्विष्णो बहुधा वीर्याणि ।
त्वं नः पृणीहि पशुभिर्विश्वरूपैःसुधायां मा धेहि परमे व्योमन् ॥ 13 ॥

(या) वह (ते) आपके (इन्द्र) सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा (तनूः) अनेक रूपों में अभिव्यक्त, व्याप्त (अप्सु) जलों में (या) वह (पृथिव्याम्) पृथ्वी में (य) वह (अन्तः) अन्दर (अग्नौ) अग्नि (या) वह (ते) आपके (इन्द्र) सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा (पवमाने) पवित्र करते हुए (स्वः विदि) आनन्द देने वाला (यया)

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



जिसके द्वारा (इन्द्र) सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा (तन्वा) रूपों में अभिव्यक्त, व्याप्त (अन्तरिक्षम्) मध्य आकाश में (व्यापित) व्यापक (तया) उसके साथ (नः) हमारे लिए (इन्द्र) सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा (तन्वा) रूपों में अभिव्यक्त, व्याप्त (शर्म) सुख (यच्छ) उपलब्ध कराता है (तव) आप (इत्) केवल (विष्णो) सर्वव्यापक, परमात्मा (बहुधा) बहुत सारे, अनेक रूपों में (वीर्याणि) बहादुरी, शक्तियाँ, गतिविधियाँ (त्वम्) आप (नः) हमें (पूणीहि) पूर्ण, आशीर्वाद (पशुभिः) सभी जीवों के साथ (विश्व रूपैः) सभी रूपों वाला (सुधायाम्) पूर्ण पोषण में, आनन्द में, अमृत में (मा) मेरे (धेहि) प्रदान करो, स्थापित करो (परमे व्योमन्) स्वयं सर्वोच्च आकाश में स्थापित, अस्तित्वमय भौतिक संसार से परे, क्वांटम (मापने योग्य अस्तित्व का निर्माता)।

व्याख्या :-

सभी पांच स्थूल तत्त्वों में कौन व्याप्त है?

इन्द्र, सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा! वह आप आपकी शक्ति जलों में अनेक रूपों में अभिव्यक्त है और व्यापक है; भूमि के अन्दर; अग्नि के अन्दर; पवित्र करने वाले, आनन्द देने वाली वायु के अन्दर, जिसके द्वारा वह आपकी रूपों में अभिव्यक्ति और व्यापकता की शक्ति मध्य आकाश अर्थात् अन्तरिक्ष में भी व्याप्त होती है, अपने उस रूपों की अभिव्यक्ति और व्यापकता के साथ कृपया हमें सुख प्रदान करो। 'विष्णु', सर्वव्यापक, परमात्मा, केवल आपकी साहसी शक्तियाँ और गतिविधियाँ बहुत सारी और अनेकों रूपों वाली है।

आप, विश्वरूपा, अनेकों रूपों वाले, कृपया सभी जीवों के साथ और सभी माध्यमों के साथ हमें आशीर्वाद दो।

कृपया मेरे अन्दर पूर्ण पोषण, आनन्द और प्रफुल्लित करने वाला अमृत प्रदान करो और स्थापित करो। परमे व्योमन् अर्थात् स्वयं सर्वोच्च आकाश में स्थापित, अस्तित्वमय भौतिक संसार से परे, आधुनिक विद्वानों की क्वांटम अवधारणा से बहुत अधिक है।

जीवन में सार्थकता :-

पूर्ण स्वास्थ्य अर्थात् शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक कल्याण किस प्रकार प्राप्त करें?

हर जीव पांच स्थूल तत्त्वों से बना है। हमारे शरीर के यह पांच स्थूल तत्त्व ब्रह्माण्डीय पांच स्थूल तत्त्वों का ही अंग हैं। हमें चेतना पूर्वक इन ब्रह्माण्डीय स्थूल तत्त्वों के प्रति कृतज्ञ रहना चाहिए। अपने व्यक्तिगत स्थूल तत्त्वों में कोई समस्या आने पर लोग चिकित्सा सहायता की तरफ दौड़ते हैं। किन्तु हमें इन स्थूल तत्त्वों के विज्ञान को समझने का प्रयास करना चाहिए और यह समझने का प्रयास करना चाहिए कि ब्रह्माण्डीय स्थूल तत्त्वों की सहायता से अपने स्थूल तत्त्वों को किस प्रकार स्वस्थ अवस्था में रखा जाये।

क्योंकि, सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा इन ब्रह्माण्डीय स्थूल तत्त्वों में व्याप्त है, इसलिए उन चेतन और मननशील मनुष्यों के लिए यह एक आध्यात्मिक उपलब्धि होगी कि वे अपने व्यक्तिगत और ब्रह्माण्डीय स्थूल तत्त्वों के सम्बन्ध के माध्यम से परमात्मा की अनुभूति प्राप्त करें।

वह परमे व्योमन् सर्वोच्च नियंत्रक है, वह समस्त पोषण, आनन्द और अमृत का देने वाला है।

अथर्ववेद 17.1.14

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



त्वामिन्द्र ब्रह्मणा वर्धयन्तः सत्रं नि षेदुऋषयो नाधमानास्तवेद्विष्णो बहुधा वीर्याणि ।
 त्वं नः पृणीहि पशुभिर्विश्वरूपैः सुधायां मा धेहि परमे व्योमन् ॥ 14 ॥

(त्वाम्) आपको (इन्द्र) सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा (ब्रह्मणा) परमात्मा के ज्ञान के साथ (वर्धयन्तः) वृद्धि करते हुए, प्रशंसा करते हुए (सत्रम्) ध्यान में, यज्ञ में (नि षेदः) लगातार बैठे हुए (ऋषयः) महान् और दिव्य दृष्टा (नाधमानाः) अन्तिम मुक्ति की इच्छा और प्रार्थना करते हुए (तव) आप (इत्) केवल (विष्णो) सर्वव्यापक, परमात्मा (बहुधा) बहुत सारे, अनेक रूपों में (वीर्याणि) बहादुरी, शक्तियाँ, गतिविधियाँ (त्वम्) आप (नः) हमें (पृणीहि) पूर्ण, आशीर्वाद (पशुभिः) सभी जीवों के साथ (विश्व रूपैः) सभी रूपों वाला (सुधायाम्) पूर्ण पोषण में, आनन्द में, अमृत में (मा) मेरे (धेहि) प्रदान करो, स्थापित करो (परमे व्योमन्) स्वयं सर्वोच्च आकाश में स्थापित, अस्तित्वमय भौतिक संसार से परे, क्वांटम (मापने योग्य अस्तित्व का निर्माता) ।

व्याख्या :-

मुक्ति की इच्छा और प्रार्थना कौन कर सकता है?

आप, इन्द्र, परमात्मा के ज्ञान के साथ महान् और दिव्य दृष्टाओं के लिए प्रशंसनीय हो और उन्नति प्रदान करने वाले हो जो अन्तिम लक्ष्य अर्थात् मुक्ति अर्थात् आपके साथ एकता और विलय की अनुभूति की प्रार्थना करते हुए लगातार ध्यान-साधना में बैठते हैं और यज्ञ कार्यों को करते हैं। 'विष्णु', सर्वव्यापक, परमात्मा केवल आपकी साहसी शक्तियाँ और गतिविधियाँ बहुत सारी और अनेकों रूपों वाली है।

आप, विश्वरूपा, अनेकों रूपों वाले, कृपया सभी जीवों के साथ और सभी माध्यमों के साथ हमें आशीर्वाद दो।

कृपया मेरे अन्दर पूर्ण पोषण, आनन्द और प्रफुल्लित करने वाला अमृत प्रदान करो और स्थापित करो। परमे व्योमन् अर्थात् स्वयं सर्वोच्च आकाश में स्थापित, अस्तित्वमय भौतिक संसार से परे, आधुनिक विद्वानों की क्वांटम अवधारणा से बहुत अधिक है।

जीवन में सार्थकता :-

ऋषि कौन होता है?

ऋषि वह है जो परमात्मा की अनुभूति प्राप्त करना चाहता है और मुक्ति के अतिरिक्त कुछ भी नहीं चाहता, भौतिक इच्छाओं से तो कोसों दूर। एक ऋषि वह है जो अपने लिए या किसी भौतिक उपलब्धियों और लक्ष्यों आदि के लिए जीवन नहीं जीता। यज्ञ कार्यों को करते हुए वह न तो कर्ता होने का दावा करता है और न ही अपने कार्यों का फल चाहता है। इस प्रकार उसका जीवन अहंकार और इच्छाओं से मुक्त होता है।

केवल ऐसा ही व्यक्ति अपने मन की वृत्तियों को समाप्त करके उसे परमात्मा की श्रद्धा में लगा देता है।

सूक्ति :- (त्वाम् इन्द्र ब्रह्मणा वर्धयन्तः सत्रम् नि षेदः ऋषयः नाधमानाः — अथर्ववेद 17.1.14) आप, इन्द्र, परमात्मा के ज्ञान के साथ महान् और दिव्य दृष्टाओं के लिए प्रशंसनीय हो और उन्नति प्रदान

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



करने वाले हो जो अन्तिम लक्ष्य अर्थात् मुक्ति अर्थात् आपके साथ एकता और विलय की अनुभूति की प्रार्थना करते हुए लगातार ध्यान-साधना में बैठते हैं और यज्ञ कार्यो को करते हैं।

अथर्ववेद 17.1.15

त्वं तृतं त्वं पर्येष्यत्सं सहस्रधारं विदथं स्वर्विदं तवेद्विष्णो बहुधा वीर्याणि ।
त्वं नः पृणीहि पशुभिर्विश्वरूपैः सुधायां मा धेहि परमे व्योमन् ॥ 15 ॥

(त्वम्) आप (तृतम्) तीन में (दिव्य प्रकाश के – देवता, मनुष्य और राक्षस; सत्व, रज और तम; देवपूजा, संगतिकरण (सामाजिक एकता) तथा दान; शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक; जागृत, स्वप्न और सुशुप्ति; ज्ञान मार्ग, कर्म मार्ग और उपासना मार्ग; इलेक्ट्रॉन अर्थात् तटस्थ प्रभाव, प्रोट्रॉन अर्थात् सकारात्मक प्रभाव, न्यूट्रॉन अर्थात् नकारात्मक प्रभाव; ईश्वर, जीव और प्रकृति) (त्वम्) आप (पर्येषि) सभी दिशाओं से व्याप्त (उत्सम्) स्रोत (उक्त तीन में सबका) (सहस्रधारम्) हजारों अर्थात् असंख्य धाराओं वाला (विदथम्) ज्ञान और यज्ञ (स्वः विदम्) आनन्द देने वाला (तव) आप (इत्) केवल (विष्णो) सर्वव्यापक, परमात्मा (बहुधा) बहुत सारे, अनेक रूपों में (वीर्याणि) बहादुरी, शक्तियाँ, गतिविधियाँ (त्वम्) आप (नः) हमें (पृणीहि) पूर्ण, आशीर्वाद (पशुभिः) सभी जीवों के साथ (विश्व रूपैः) सभी रूपों वाला (सुधायाम्) पूर्ण पोषण में, आनन्द में, अमृत में (मा) मेरे (धेहि) प्रदान करो, स्थापित करो (परमे व्योमन्) स्वयं सर्वोच्च आकाश में स्थापित, अस्तित्वमय भौतिक संसार से परे, क्वांटम (मापने योग्य अस्तित्व का निर्माता)।

व्याख्या :-

प्रत्येक वस्तु का स्रोत कौन है?

आप, विष्णु, विश्वरूप, परमे व्योमन्, परमात्मा, सभी दिशाओं से तीन में व्याप्त हो (दिव्य प्रकाश के – देवता, मनुष्य और राक्षस; सत्व, रज और तम; देवपूजा, संगतिकरण (सामाजिक एकता) तथा दान; शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक; जागृत, स्वप्न और सुशुप्ति; ज्ञान मार्ग, कर्म मार्ग और उपासना मार्ग; इलेक्ट्रॉन अर्थात् तटस्थ प्रभाव, प्रोट्रॉन अर्थात् सकारात्मक प्रभाव, न्यूट्रॉन अर्थात् नकारात्मक प्रभाव; ईश्वर, जीव और प्रकृति) और इन तीन में प्रत्येक का स्वरूप हो।

वह आप, परमात्मा, के तीन लक्षण हैं :- 1. (सहस्रधारम्) हजारों अर्थात् असंख्य धाराओं वाला, 2. (विदथम्) ज्ञान और यज्ञ और 3. (स्वः विदम्) आनन्द देने वाला।

‘विष्णु’, सर्वव्यापक, परमात्मा केवल आपकी साहसी शक्तियाँ और गतिविधियाँ बहुत सारी और अनेकों रूपों वाली है।

आप, विश्वरूपा, अनेकों रूपों वाले, कृपया सभी जीवों के साथ और सभी माध्यमों के साथ हमें आशीर्वाद दो।

कृपया मेरे अन्दर पूर्ण पोषण, आनन्द और प्रफुल्लित करने वाला अमृत प्रदान करो और स्थापित करो। परमे व्योमन् अर्थात् स्वयं सर्वोच्च आकाश में स्थापित, अस्तित्वमय भौतिक संसार से परे, आधुनिक विद्वानों की क्वांटम अवधारणा से बहुत अधिक है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



जीवन में सार्थकता :-

जब परमात्मा इस सृष्टि में हर वस्तु का स्रोत है और सर्वत्र व्यापक है तो उसकी अनुभूति करना कठिन क्यों है?

परमात्मा और हमारे बीच केवल अज्ञानता ही ऐसी बाधा है जिसके कारण हम भिन्न-भिन्न वस्तुओं और जीवों के नाम और रूपों में खो जाते हैं। इससे भी अधिक, लोग इन नामों और रूपों को वास्तविक समझकर इनकी संगति में आनन्दित होते हैं। इस प्रकार वे हर दिखाई देने वाली वस्तु के वास्तविक और स्थाई स्रोत की खोज करना भूल जाते हैं।

एक बार यदि हम उस वास्तविक स्रोत, परमात्मा की खोज की इच्छा करें तो 'नेति-नेति' अर्थात् यह नहीं, यह नहीं, की प्रक्रिया के माध्यम से हम उस वास्तविक और रूप रहित शक्ति की अनुभूति प्राप्त कर पायेंगे।

सूक्ति :- (त्वम् तृतम् त्वम् पर्येषि उत्सम् — अथर्ववेद 17.1.15) आप, विष्णु, विश्वरूप, परमे व्योमन्, परमात्मा, सभी दिशाओं से तीन में व्याप्त हो (दिव्य प्रकाश के — देवता, मनुष्य और राक्षस; सत्व, रज और तम; देवपूजा, संगतिकरण (सामाजिक एकता) तथा दान; शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक; जागृत, स्वप्न और सुशुप्ति; ज्ञान मार्ग, कर्म मार्ग और उपासना मार्ग; इलेक्ट्रॉन अर्थात् तटस्थ प्रभाव, प्रोटॉन अर्थात् सकारात्मक प्रभाव, न्यूट्रॉन अर्थात् नकारात्मक प्रभाव; ईश्वर, जीव और प्रकृति) और इन तीन में प्रत्येक का स्वरूप हो।

अथर्ववेद 17.1.16

त्वं रक्षसे प्रदिशश्चतस्रस्त्वं शोचिषा नभसी वि भासि।

त्वमिमा विश्वा भुवनानु तिष्ठस ऋतस्य पन्थामन्वेषि विद्वांस्तवेद्विष्णो बहुधा वीर्याणि।

त्वं नः पृणीहि पशुभिर्विश्वरूपैः सुधायां मा धेहि परमे व्योमन्॥ 16॥

(त्वम्) आप (रक्षसे) रक्षा करते हो (प्रदिशः) सभी दिशाओं में (चतस्रः) चार (त्वम्) आप (शोचिषा) प्रकाश और पवित्रता के साथ (नभसी) स्वर्ग और अन्तरिक्ष में (वि भासि) विशेष रूप से, भिन्न-भिन्न प्रकार से चमकता है (त्वम्) आप (इमा) ये (विश्वा) सब (भुवन) अस्तित्वमय संसार (अनु तिष्ठसे) व्याप्त अवस्था में (ऋतस्य) सत्य का (पन्थाम्) पथ (अनु एषि) प्राप्त हो (विद्वांसु) विद्वता (तव) आप (इत्) केवल (विष्णो) सर्वव्यापक, परमात्मा (बहुधा) बहुत सारे, अनेक रूपों में (वीर्याणि) बहादुरी, शक्तियाँ, गतिविधियाँ (त्वम्) आप (नः) हमें (पृणीहि) पूर्ण, आशीर्वाद (पशुभिः) सभी जीवों के साथ (विश्व रूपैः) सभी रूपों वाला (सुधायाम्) पूर्ण पोषण में, आनन्द में, अमृत में (मा) मेरे (धेहि) प्रदान करो, स्थापित करो (परमे व्योमन्) स्वयं सर्वोच्च आकाश में स्थापित, अस्तित्वमय भौतिक संसार से परे, क्वांटम (मापने योग्य अस्तित्व का निर्माता)।

व्याख्या :-

इस सृष्टि में सर्वत्र कौन रक्षा करता है और चमकता है?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



आप, विष्णु, विश्वरूप, परमे व्योमन्, परमात्मा, सभी चारों दिशाओं की रक्षा करते हो। आप स्वर्ग और अन्तरिक्ष में प्रकाश और पवित्रता के साथ विशेष रूप से और भिन्न-भिन्न प्रकार से चमकते हो। आप अस्तित्वमय तीनों संसारों में व्याप्त हो और स्थापित हो।

‘विष्णु’, सर्वव्यापक, परमात्मा केवल आपकी साहसी शक्तियाँ और गतिविधियाँ बहुत सारी और अनेकों रूपों वाली है।

आप, विश्वरूपा, अनेकों रूपों वाले, कृपया सभी जीवों के साथ और सभी माध्यमों के साथ हमें आशीर्वाद दो।

कृपया मेरे अन्दर पूर्ण पोषण, आनन्द और प्रफुल्लित करने वाला अमृत प्रदान करो और स्थापित करो। परमे व्योमन् अर्थात् स्वयं सर्वोच्च आकाश में स्थापित, अस्तित्वमय भौतिक संसार से परे, आधुनिक विद्वानों की क्वांटम अवधारणा से बहुत अधिक है।

जीवन में सार्थकता :-

परमात्मा प्रत्येक को सर्वत्र किस प्रकार सुरक्षित करता है?

परमात्मा, विष्णु, विश्वरूप, परमे व्योमन् होने के कारण इस सृष्टि में सबकी रक्षा करता है और सर्वत्र चमकता है। अतः भूतकाल, वर्तमानकाल और भविष्यकाल के प्रति हमें कोई चिन्ता, तनाव, जिज्ञासा या अवसाद आदि नहीं होना चाहिए। हमें उस सर्वोच्च शक्ति के विज्ञान को समझना चाहिए कि वह भगवान किस प्रकार सबका रक्षक है।

वह सर्वविद्यमान, सर्वज्ञाता और सर्वशक्तिमान है। सब जगह विद्यमान होने के कारण वह सबके विचारों और कार्यों को जानता है और अपनी सर्वोच्च शक्तियों के साथ वह सभी कार्यों और विचारों का बराबर और विपरीत फल प्रदान करता है। इस प्रकार वह प्रत्येक प्राणी को दण्डित करते हुए सुधार के लिए प्रेरित करता है। इस प्रकार वह सबकी रक्षा करता है।

इसलिए हमें अपने जीवन के अन्दर ही अपने मन पर नियंत्रण करने के लिए उस सर्वोच्च दिव्य के साथ सम्बन्धित रहना चाहिए और यह अनुभूति प्राप्त करनी चाहिए कि वह सभी कार्यों का वास्तविक कर्ता है। उसकी सम्बद्धता के साथ हमारा मन ऐसे विचारों को पैदा करना प्रारम्भ कर देता है जो दिव्य ज्ञान और कार्यों का अनुसरण करे। इस प्रकार हमारी रक्षा होती है।

सूक्ति :- (त्वम् रक्षसे प्रदिशः चतस्रः — अथर्ववेद 17.1.16) आप, विष्णु, विश्वरूप, परमे व्योमन्, परमात्मा, सभी चारों दिशाओं की रक्षा करते हो।

अथर्ववेद 17.1.17

पंचभिः पराङ् तपस्येकयार्वाडशस्तिमेषि सुदिने बाधमानस्तवेद्विष्णो बहुधा वीर्याणि।

त्वं नः पृणीहि पशुभिर्विश्वरूपैः सुधायां मा धेहि परमे व्योमन्॥ 17॥

(पंचभिः) पांच के साथ (पराङ्) अत्यन्त दूर (बाहरी संसार में) (तपसि) परिपक्व होता है, चमकता है (एकया) एक के साथ (अर्वाड) निकटता (अन्दर) (अस्तिम्) बदनाम (कार्य तथा विचार) (एषि) की तरफ चलता है (सुदिने) उत्तम दिन, समय, अवस्था (बाधमानः) हटा देता है, रोक देता है (तव) आप (इत्) केवल (विष्णो) सर्वव्यापक, परमात्मा (बहुधा) बहुत सारे, अनेक रूपों में (वीर्याणि) बहादुरी, शक्तियाँ, गतिविधियाँ (त्वम्) आप (नः) हमें (पृणीहि) पूर्ण, आशीर्वाद (पशुभिः) सभी जीवों के साथ (विश्व रूपैः)

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



सभी रूपों वाला (सुधायाम्) पूर्ण पोषण में, आनन्द में, अमृत में (मा) मेरे (धेहि) प्रदान करो, स्थापित करो (परमे व्योमन्) स्वयं सर्वोच्च आकाश में स्थापित, अस्तित्वमय भौतिक संसार से परे, क्वांटम (मापने योग्य अस्तित्व का निर्माता)।

व्याख्या :-

दिव्य संरक्षण के क्या साधन हैं?

एक व्यक्ति अत्यन्त दूर (बाहरी संसार में) पांच के साथ (ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों) परिपक्व होता है और चमकता है। जबकि निकटता (भीतर) एक अर्थात् मन के साथ। वह बदनाम (कार्यों और विचारों) को हटा देता है या रोक देता है (जब मन उनकी तरफ जाता है) तथा वह उत्तम दिनों, समय और अवस्थाओं की तरफ ले जाता है (उत्तम विचारों और कार्यों की प्रेरणाओं के साथ)।

‘विष्णु’, सर्वव्यापक, परमात्मा केवल आपकी साहसी शक्तियाँ और गतिविधियाँ बहुत सारी और अनेकों रूपों वाली है।

आप, विश्वरूपा, अनेकों रूपों वाले, कृपया सभी जीवों के साथ और सभी माध्यमों के साथ हमें आशीर्वाद दो।

कृपया मेरे अन्दर पूर्ण पोषण, आनन्द और प्रफुल्लित करने वाला अमृत प्रदान करो और स्थापित करो। परमे व्योमन् अर्थात् स्वयं सर्वोच्च आकाश में स्थापित, अस्तित्वमय भौतिक संसार से परे, आधुनिक विद्वानों की क्वांटम अवधारणा से बहुत अधिक है।

जीवन में सार्थकता :-

अपनी इन्द्रियों को किस प्रकार नियंत्रण में रखें?

दिव्य संरक्षण के पांच साधन मन के साथ सफलतापूर्वक कार्य करते हैं यदि एक साधक अपने निर्धारित लक्ष्य के लिए कार्य करने हेतु उन्हें प्रशिक्षित करे, अन्यथा ये साधन अनियंत्रित अश्वों की तरह कार्य करते हैं और रथ के स्वामी को अज्ञात और अनिच्छित स्थान पर ले जाते हैं।

मन और ज्ञानेन्द्रियों को नियंत्रण करने के कई तरीके हैं। बिना अहंकार और इच्छाओं के कार्य करना जीवन के किसी भी क्षेत्र में सफलता का एक सामान्य मार्ग है। मन और सभी इन्द्रियों पर पूर्ण नियंत्रण स्थापित किये बिना अहंकार और इच्छाओं के शिकंजे से बाहर निकलना सम्भव नहीं है। इसके अतिरिक्त समर्पण, श्रद्धा, एकाग्रता तथा प्रत्येक कार्य को चेतना के साथ करने से प्रत्येक कार्य सरल हो जाता है। निःसंदेह इन्द्रियों पर प्रतिक्षण नियंत्रण रखना होता है।

मन और पांच ज्ञानेन्द्रियों के अतिरिक्त पांच कर्मेन्द्रियों को नियंत्रण में रखना भी महत्वपूर्ण है।

सूक्ति :- (पंचभिः पराङ् तपसि एकया अर्वाङ् – अथर्ववेद 17.1.17) एक व्यक्ति अत्यन्त दूर (बाहरी संसार में) पांच के साथ (ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों) परिपक्व होता है और चमकता है।

अथर्ववेद 17.1.18

त्वमिन्द्रस्त्वं महेन्द्रस्त्वं लोकस्त्वं प्रजापतिः।

तुभ्यं यज्ञो वितायते तुभ्यं जुह्वति जुह्वतस्तवेद्विष्णो बहुधा वीर्याणि।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



त्वं नः पृणीहि पशुभिर्विश्वरूपैः सुधायां मा धेहि परमे व्योमन् ॥ 18 ॥

(त्वम्) आप (इन्द्रः) सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा (त्वम्) आप (महेन्द्रः) महान् और सर्वोच्च नियंत्रक (त्वम्) आप (लोकः) अस्तित्वमय संसार (त्वम्) आप (प्रजापतिः) सब जीवों का स्वामी और संरक्षक (तुभ्यम्) आपके लिए (आपका अनुपालन करने के लिए) (यज्ञः) यज्ञ कार्य (वि तायते) कार्य करना और विस्तार करना (तुभ्यम्) आपके लिए, आपका अनुसरण करने के लिए (जुह्वति) यज्ञ को करने वाला, आहुतियाँ देने वाला (जुह्वतः) यज्ञ करता है, आहुतियाँ देता है (तव) आप (इत्) केवल (विष्णो) सर्वव्यापक, परमात्मा (बहुधा) बहुत सारे, अनेक रूपों में (वीर्याणि) बहादुरी, शक्तियाँ, गतिविधियाँ (त्वम्) आप (नः) हमें (पृणीहि) पूर्ण, आशीर्वाद (पशुभिः) सभी जीवों के साथ (विश्व रूपैः) सभी रूपों वाला (सुधायाम्) पूर्ण पोषण में, आनन्द में, अमृत में (मा) मेरे (धेहि) प्रदान करो, स्थापित करो (परमे व्योमन्) स्वयं सर्वोच्च आकाश में स्थापित, अस्तित्वमय भौतिक संसार से परे, क्वांटम (मापने योग्य अस्तित्व का निर्माता)।

व्याख्या :-

सभी यज्ञ कार्यों का प्रबन्ध करने वाला कौन है?

आप सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा को; आप महान् और सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा हो; आप अस्तित्वमय संसार हो; आप सभी जीवों के स्वामी और संरक्षक हो। यज्ञ कार्यों का करना और उनका विस्तार आपके लिए अर्थात् आपका अनुसरण करने के लिए होता है। आपके लिए अर्थात् आपका अनुसरण करने के लिए ही यज्ञ करने वाला यज्ञ करता है और आहुतियाँ देने वाले आहुतियाँ देते हैं।

‘विष्णु’, सर्वव्यापक, परमात्मा केवल आपकी साहसी शक्तियाँ और गतिविधियाँ बहुत सारी और अनेकों रूपों वाली है।

आप, विश्वरूपा, अनेकों रूपों वाले, कृपया सभी जीवों के साथ और सभी माध्यमों के साथ हमें आशीर्वाद दो।

कृपया मेरे अन्दर पूर्ण पोषण, आनन्द और प्रफुल्लित करने वाला अमृत प्रदान करो और स्थापित करो। परमे व्योमन् अर्थात् स्वयं सर्वोच्च आकाश में स्थापित, अस्तित्वमय भौतिक संसार से परे, आधुनिक विद्वानों की क्वांटम अवधारणा से बहुत अधिक है।

जीवन में सार्थकता :-

यज्ञ जीवन की यात्रा कहाँ पहुँचती है?

समूची सृष्टि एक ब्रह्माण्डीय यज्ञ की तरह अर्थात् सबके कल्याण के लिए, बेशक उनके अपने-अपने कार्यों और विचारों के अनुसार, परमात्मा की अभिव्यक्ति है। अतः ब्रह्माण्डीय बुद्धि के साथ एकात्मता सुनिश्चित करने के लिए प्रत्येक मनुष्य को यज्ञ जीवन के सिद्धान्त का अनुसरण अवश्य करना चाहिए। यज्ञ जीवन का सार है – स्वयं अपने लिए नहीं जीना, बल्कि दूसरों के लिए जीना। अन्य लोगों के कल्याण के लिए सोचो और करो। केवल यज्ञ जीवन के साथ ही कोई व्यक्ति ऋषि बन सकता है और परमात्मा के साथ सम्पर्क स्थापित कर सकता है। एक ऋषि स्थाई रूप से शान्त रूप से जीवन जीने के लिए और मुक्ति की तरफ अग्रसर होने के लिए ब्रह्माण्डीय बुद्धि से ज्ञान का प्रकाश और तरंगे प्राप्त करते हुए दृष्टा बन सकता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



सूक्ति :- (तुभ्यम् यज्ञः वि तायते तुभ्यम् जुह्वति जुह्वतः — अथर्ववेद 17.1.18) यज्ञ कार्यो का करना और उनका विस्तार आपके लिए अर्थात् आपका अनुसरण करने के लिए होता है। आपके लिए अर्थात् आपका अनुसरण करने के लिए ही यज्ञ करने वाला यज्ञ करता है और आहुतियाँ देने वाले आहुतियाँ देते हैं।

अथर्ववेद 17.1.19

असति सत्प्रतिष्ठितं सति भूतं प्रतिष्ठितम्।
भूतं ह भव्य आहितं भव्यंभूते प्रतिष्ठितं तवेद्विष्णो बहुधा वीर्याणि।
त्वं नः पृणीहि पशुभिर्विश्वरूपैः सुधायां मा धेहि परमे व्योमन्॥19॥

(असति) अवास्तविक में (अस्तित्व वाला भौतिक संसार) (सत्) वास्तविक (ब्रह्म) (प्रतिष्ठितम्) स्थापित है, निर्भर करता है (सति) वास्तविक में, ब्रह्म में (भूतम्) भौतिक संसार (प्रतिष्ठितम्) स्थापित है, निर्भर करता है (भूतम्) पूर्वकाल (ह) निश्चित रूप से (भव्ये) भविष्यकाल में (आहितम्) निवेष्टित है (भव्यम्) भविष्यकाल (भूते) भूतकाल में (प्रतिष्ठितम्) स्थापित है, निर्भर करता है (तव) आप (इत्) केवल (विष्णो) सर्वव्यापक, परमात्मा (बहुधा) बहुत सारे, अनेक रूपों में (वीर्याणि) बहादुरी, शक्तियाँ, गतिविधियाँ (त्वम्) आप (नः) हमें (पृणीहि) पूर्ण, आशीर्वाद (पशुभिः) सभी जीवों के साथ (विश्व रूपैः) सभी रूपों वाला (सुधायाम्) पूर्ण पोषण में, आनन्द में, अमृत में (मा) मेरे (धेहि) प्रदान करो, स्थापित करो (परमे व्योमन्) स्वयं सर्वोच्च आकाश में स्थापित, अस्तित्वमय भौतिक संसार से परे, क्वांटम (मापने योग्य अस्तित्व का निर्माता)।

व्याख्या :-

वास्तविक और अवास्तविक कहाँ पर स्थापित है?

समय कहाँ पर स्थापित है?

वास्तविक (ब्रह्म) अवास्तविक (अस्तित्व वाले भौतिक संसार) में स्थापित है और भौतिक संसार (अभिव्यक्त सृष्टि) वास्तविक (ब्रह्म) में स्थापित है। भूतकाल का निवेश निश्चित रूप से भविष्य में होता है और भविष्य भूतकाल पर निर्भर करता है।

'विष्णु', सर्वव्यापक, परमात्मा केवल आपकी साहसी शक्तियाँ और गतिविधियाँ बहुत सारी और अनेकों रूपों वाली है।

आप, विश्वरूपा, अनेकों रूपों वाले, कृपया सभी जीवों के साथ और सभी माध्यमों के साथ हमें आशीर्वाद दो।

कृपया मेरे अन्दर पूर्ण पोषण, आनन्द और प्रफुल्लित करने वाला अमृत प्रदान करो और स्थापित करो। परमे व्योमन् अर्थात् स्वयं सर्वोच्च आकाश में स्थापित, अस्तित्वमय भौतिक संसार से परे, आधुनिक विद्वानों की क्वांटम अवधारणा से बहुत अधिक है।

जीवन में सार्थकता :-

अन्तरिक्षक किसने बनाया और वह स्वयं कहाँ है?

भूतकाल और भविष्यकाल के सम्बन्ध के पीछे क्या सिद्धान्त है?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



अभिव्यक्त संसार अन्तरिक्ष में है, समूचा अन्तरिक्ष परमात्मा की अभिव्यक्ति है जो सृष्टि के अन्दर तथा बहार स्थापित है। इसका अभिप्राय है कि दोनों का परस्पर सम्बन्ध है, बेशक सर्वशक्तिमान और सबका निर्माण करने में सक्षम वह परमात्मा ही सबका निर्माता है।

इसी प्रकार भूतकाल भविष्य में निवेष्टित है और भविष्यकाल भूतकाल पर निर्भर करता है। इससे कर्मफल के सिद्धान्त का भी संकेत मिलता है अर्थात् कर्म और उसके फल। भूतकाल में जिसने जो भी कार्य किया, वह भविष्य में समान और विपरीत का सामना करेगा।

भविष्य भूतकाल पर निर्भर करता है। इसका अभिप्राय यह है कि भविष्य में जो भी घटना होगी वह भूतकाल में पूर्व निर्धारित है।

भूत और भविष्य के परस्पर सम्बन्ध में से हमें दो उपरोक्त सिद्धान्त निकालने चाहिए। हमारे नियंत्रण में न तो भूतकाल और न ही भविष्यकाल है। अतः हमें तो केवल वर्तमान पर ही ध्यान एकाग्र करना चाहिए।

सूक्ति 1 :- (असति सत् प्रतिष्ठितम् सति भूतम् प्रतिष्ठितम् – अथर्ववेद 17.1.19) वास्तविक (ब्रह्म) अवास्तविक (अस्तित्व वाले भौतिक संसार) में स्थापित है और भौतिक संसार (अभिव्यक्त सृष्टि) वास्तविक (ब्रह्म) में स्थापित है।

सूक्ति 2 :- (भूतम् ह भव्ये आहितम् भव्यम् भूते – अथर्ववेद 17.1.19) भूतकाल का निवेश निश्चित रूप से भविष्य में होता है और भविष्य भूतकाल पर निर्भर करता है।

अथर्ववेद 17.1.20

शुक्रोऽसिभ्राजोऽसि ।

स यथा त्वं भ्राजता भ्राजोऽस्येवाहं भ्राजता भ्राज्यासम् ।।20।।

(शुक्रः) पवित्र, शक्तिशाली (असि) हो (भ्राजः) चमकते हुए, ज्वलनशील (असि) हो (सः) वह (यथा) जैसे कि (त्वम्) आप (भ्राजता) स्व-प्रकाश के साथ (भ्राजः) चमकते हुए, ज्वलनशील (असि) हो (एव) इसी प्रकार (अहम्) मैं (भ्राजता) स्व-प्रकाश के साथ (भ्राज्यासम्) चमकता हुआ और प्रकाशित बन जाऊँ।

व्याख्या :-

चमक का स्रोत क्या है?

आप (परमात्मा तथा सभी दिव्य शक्तियाँ) पवित्र और शक्तिशाली हो; आप चमकते हुए और ज्वलनशील हो। जिस प्रकार आप चमकते हुए और ज्वलनशील हो, उसी प्रकार मैं भी स्व-प्रकाश के साथ चमकता हुआ और ज्वलनशील बन जाऊँ।

जीवन में सार्थकता :-

चमक के स्रोत के साथ सम्पर्क कैसे स्थापित किया जा सकता है?

परमात्मा स्व-प्रकाशित है। उसकी सभी दिव्य शक्तियाँ उसके सर्वोच्च प्रकाश से चमकती हैं। मनुष्य भी चेतना पूर्वक उस परमात्मा के साथ सम्पर्क स्थापित करके चमक सकता है, क्योंकि यह केवल

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



उसी की चमक है जो समूचे संसार को प्रकाशित करती है और मनुष्यों को भी ज्ञानवान और प्रकाशित कर सकती है।

सभी दिव्य शक्तियाँ अचेतन अस्तित्व हैं, इसलिए उनके अन्दर अहंकार या इच्छाएँ नहीं होती, किन्तु मनुष्य अपने चेतन मन और बुद्धि के कारण, इच्छाओं के पीछे भागते हुए अपने अस्तित्व का अहंकार और कर्ता होने की भावना विकसित कर लेता है। आध्यात्मिक जिज्ञासु मनुष्यों के लिए परमात्मा के साथ निकट सम्पर्क और उसके साथ एकात्मता की अनुभूति करने के लिए एक ही मार्ग है कि अपने मन को इस प्रकार प्रशिक्षित करे जिससे अहंकार और इच्छाओं की समाप्ति हो जाये। क्योंकि परमात्मा स्व-प्रकाशित है, हम भी उसी के प्रकाश से चमक सकते हैं, यदि हम उसके साथ सम्पर्क स्थापित कर लें और अपने जीवन में उसकी उपस्थिति और शक्तियों का उदय कर लें।

सूक्ति 1 :- (शुक्रः असि भ्राजः असि – अथर्ववेद 17.1.20) आप (परमात्मा तथा सभी दिव्य शक्तियाँ) पवित्र और शक्तिशाली हो; आप चमकते हुए और ज्वलनशील हो।

सूक्ति 2 :- (सः यथा त्वम् भ्राजता भ्राजः असि एव अहम् भ्राजता भ्राज्यासम् – अथर्ववेद 17.1.20) जिस प्रकार आप चमकते हुए और ज्वलनशील हो, उसी प्रकार मैं भी स्व-प्रकाश के साथ चमकता हुआ और ज्वलनशील बन जाऊँ।

अथर्ववेद 17.1.21

रुचिरसि रोचोऽसि।

स यथा त्वं रुच्या रोचोऽस्येवाहं पशुभिश्च ब्राह्मणवर्चसेन चरुचिषीय।।21।।

(रुचिः) प्रेम, आभा (असि) हो (रोचः) प्रेम पैदा करने वाले, आभा चमकाने वाले (असि) हो (सः) वह (यथा) जैसे कि (त्वम्) आप (रुच्या) प्रेम, आभा के साथ (रोचः) प्रेम, आभा (असि) हो (एव) उसी प्रकार (अहम्) मैं (पशुभिः) सभी जीवों के साथ (च) और (ब्राह्मण वर्चसेन) परमात्मा के ज्ञान की चमक के साथ (च) और (रुचिषीय) प्रेम से भरपूर हो जाता है, आभा से भरपूर हो जाता है।

व्याख्या :-

प्रेम, आभा को उत्पन्न करने वाला कौन है?

हम प्रेम किसके साथ बांटें?

हम आभा को कैसे प्राप्त करें?

आप (परमात्मा तथा सभी दिव्य शक्तियाँ) प्रेम हो, आभा हो; आप प्रेम और आभा के निर्माता हो। जिस प्रकार आप प्रेम और आभा हो, उसी प्रकार मैं भी आपके प्रेम और आभा के साथ सभी जीवों के लिए प्रेम और आभा से परिपूर्ण हो जाऊँ और परमात्मा के ज्ञान की चमक को प्राप्त करूँ

जीवन में सार्थकता :-

सबके लिए समान प्रेम कैसे पैदा करें?

‘रुचि’ के दो अर्थ हैं – प्रेम और आभा। यह दोनों आपस में सम्बन्धित हैं। प्रेम ही आभा को उत्पन्न करता है। समर्पित भाव के साथ परमात्मा का दिव्य ज्ञान भी आभा उत्पन्न करता है। ऐसी आभा सब

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



जीवों के लिए प्रेम पैदा करती है। सांसारिक ज्ञान और सम्पदा भी आभा तो उत्पन्न करती है परन्तु वह आभा अहंकार की और जीवन के दिखावे की होती है। ऐसी सांसारिक आभा वास्तविक नहीं होती और अक्सर इसमें प्रेम नहीं होता। इसमें कल्याण की भावना हो भी सकती है और नहीं भी।

अतः सब जीवों के लिए प्रेम तो परमात्मा की तरफ से सब जीवों को उपहार है। यह उन दिव्य लोगों में सबके लिए पैदा होता है जो प्रेम के उस स्रोत अर्थात् परमात्मा और उसके दिव्य ज्ञान से जुड़े होते हैं। यह दिव्य प्रेम है और प्राकृतिक आभा को उत्पन्न करता है।

सूक्ति 1 :- (रुचिः असि रोचः असि — अथर्ववेद 17.1.21) आप (परमात्मा तथा सभी दिव्य शक्तियों) प्रेम हो, आभा हो; आप प्रेम और आभा के निर्माता हो।

सूक्ति 2 :- (सः यथा त्वम् रुच्या रोचः असि एव अहम् पशुभिः च ब्राह्मण वर्चसेन च रुचिषीय — अथर्ववेद 17.1.21) जिस प्रकार आप प्रेम और आभा हो, उसी प्रकार मैं भी आपके प्रेम और आभा के साथ सभी जीवों के लिए प्रेम और आभा से परिपूर्ण हो जाऊँ और परमात्मा के ज्ञान की चमक को प्राप्त करूँ

अथर्ववेद 17.1.22

उद्यते नम उदायते नम उदिताय नमः।
विराजे नमः स्वराजे नमः सम्राजे नमः॥22॥

(उद्यते) सृष्टि की प्रारम्भिक अवस्था के लिए, उदय होते हुए (सूर्य के लिए) (नमः) नमन (उदायते) सृष्टि की प्रक्रिया के लिए, उदय हो चुके (सूर्य) के लिए (नमः) नमन (उदिताय) अभिव्यक्त सृष्टि के लिए, सर्वोच्च शिखर वाले (सूर्य) के लिए (नमः) नमन (विराजे) विशेष रूप से स्थापित, व्यापक शासक, प्रकाश की चमक के लिए (नमः) नमन (स्वराजे) अपने में स्थापित के लिए, स्व-प्रकाश की शक्तियों से शासन करने वाले के लिए (नमः) नमन (सम्राजे) सभी समयों में समान रूप से स्थापित के लिए, सर्वोच्च शासक और सबके प्रकाश के लिए (नमः) नमन।

व्याख्या :-

हम सूर्य को कब नमन करते हैं?

हम परमात्मा को कब नमन करते हैं?

परमात्मा की सर्वोच्चता की तीन अवस्थाएँ हौन हैं?

यह मन्त्र परमात्मा को तथा सूर्य को उनकी उपस्थिति की अलग-अलग अवस्थाओं तथा उनके शासन की सर्वोच्चता के भिन्न-भिन्न स्तरों पर नमन प्रस्तुत करता है।

हमारा नमन परमात्मा को जब वह सृष्टि की प्रारम्भिक अवस्था में होता है; जब वह सृष्टि निर्माण की प्रक्रिया में होता है; जब वह सृष्टि में अभिव्यक्त होता है।

हमारा नमन सूर्य को जब वह उदय होने लगता है; जब वह उदित हो जाता है; जब वह सर्वोच्च शिखर पर होता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



हमारा नमन परमात्मा के लिए जो विशेष रूप से स्थापित व्यापक शासक है, प्रकाश से चमक रहा है; जो अपने स्वयं में स्थापित है अर्थात् अपनी शक्तियों में और स्व-प्रकाश में; जो सभी कालों में सर्वत्र और सबके लिए प्रकाशित है।

जीवन में सार्थकता :-

उदय होता हुआ व्यक्तित्व कौन है?

हर कोई बढ़ते हुए और उदय होते हुए लोगों को नमन करता है। एक व्यक्ति जो यज्ञ करने वाले अपने कर्तव्यों पर एकाग्र होता है और अपने जीवन को पूरे प्रेम और समर्पण के साथ परमात्मा की श्रद्धा में लगाता है, वह उदय होता हुआ व्यक्ति माना जाता है। यहाँ तक कि परमात्मा भी ऐसे श्रद्धालुओं को प्रेम करते हैं।

सूक्ति 1 :- (उद्यते नमः उदायते नमः उदिताय नमः — अथर्ववेद 17.1.22) हमारा नमन परमात्मा को जब वह सृष्टि की प्रारम्भिक अवस्था में होता है; जब वह सृष्टि निर्माण की प्रक्रिया में होता है; जब वह सृष्टि में अभिव्यक्त होता है।

हमारा नमन सूर्य को जब वह उदय होने लगता है; जब वह उदित हो जाता है; जब वह सर्वोच्च शिखर पर होता है।

सूक्ति 2 :- (विराजे नमः स्वराजे नमः सम्राजे नमः — अथर्ववेद 17.1.22 तथा 23) हमारा नमन परमात्मा के लिए जो विशेष रूप से स्थापित व्यापक शासक है, प्रकाश से चमक रहा है; जो अपने स्वयं में स्थापित है अर्थात् अपनी शक्तियों में और स्व-प्रकाश में; जो सभी कालों में सर्वत्र और सबके लिए प्रकाशित है।

अथर्ववेद 17.1.23

अस्तंयते नमोऽस्तमेष्यते नमोऽस्तमिताय नमः।

विराजे नमः स्वराजे नमः सम्राजे नमः॥23॥

(अस्तंयते) प्रलय की शुरुआत के लिए, अस्त होते हुए (सूर्य) के लिए (नमः) नमन (अस्तमेष्यते) प्रलय में लगे हुए के लिए, अस्त होने के लिए तैयार (सूर्य) के लिए (नमः) नमन (अस्तमिताय) पूर्ण प्रलय के लिए, अस्त (सूर्य) के लिए (नमः) नमन (विराजे) विशेष रूप से स्थापित, व्यापक शासक, प्रकाश की चमक के लिए (नमः) नमन (स्वराजे) अपने में स्थापित के लिए, स्व-प्रकाश की शक्तियों से शासन करने वाले के लिए (नमः) नमन (सम्राजे) सभी समयों में समान रूप से स्थापित के लिए, सर्वोच्च शासक और सबके प्रकाश के लिए (नमः) नमन।

व्याख्या :-

क्या हमें सृष्टि के प्रलय के लिए परमात्मा को नमन करना चाहिए?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM
Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.
For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



क्या हमें अस्त होते हुए सूर्य को नमन करना चाहिए?

यह मन्त्र परमात्मा को तथा सूर्य को अस्त होने की अलग-अलग अवस्थाओं में नमन करता है।

हमारा नमन परमात्मा को जब वह सृष्टि के प्रलय की शुरुआत करता है; जब वह प्रलय की प्रक्रिया में लगा होता है; जब वह सृष्टि के प्रलय को पूर्ण कर लेता है।

हमारा नमन सूर्य को जब वह अस्त होने लगता है; जब वह अस्त होता हुआ; जब वह अस्त हो चुका होता है।

हमारा नमन परमात्मा के लिए जो विशेष रूप से स्थापित व्यापक शासक है, प्रकाश से चमक रहा है; जो अपने स्वयं में स्थापित है अर्थात् अपनी शक्तियों में और स्व-प्रकाश में; जो सभी कालों में सर्वत्र और सबके लिए प्रकाशित है।

जीवन में सार्थकता :-

लोग किनको उनकी अनुपस्थिति में भी नमन करते हैं?

जब कोई व्यक्ति अपने जीवन के दायित्वों को यज्ञ कार्यों की तरह सम्पन्न करके लुप्त हो जाता है तो लोग उसकी अनुपस्थिति में भी उसे नमन करते हैं। सूर्य कभी अस्त नहीं होता, परमात्मा कभी अस्तित्वहीन नहीं होता। इसी प्रकार परमात्मा के सच्चे भक्त भी कभी लुप्त नहीं होते। सभी महान् मनुष्यों के जीवन हमें स्मरण करते हैं कि हम भी महान् बन सकते हैं। अपने अस्तित्व के स्रोत के साथ अर्थात् अपने अन्दर अपनी वास्तविक शक्ति के साथ एकात्मता की अनुभूति के लिए सूर्य बनों।

सूक्ति 1 :- (अस्तंयते नमः अस्तमेष्यते नमः अस्तमिताय नमः — अथर्ववेद 17.1.23) यह मन्त्र परमात्मा को तथा सूर्य को अस्त होने की अलग-अलग अवस्थाओं में नमन करता है।

हमारा नमन परमात्मा को जब वह सृष्टि के प्रलय की शुरुआत करता है; जब वह प्रलय की प्रक्रिया में लगा होता है; जब वह सृष्टि के प्रलय को पूर्ण कर लेता है।

हमारा नमन सूर्य को जब वह अस्त होने लगता है; जब वह अस्त होता हुआ; जब वह अस्त हो चुका होता है।

अथर्ववेद 17.1.24

उदगादयमादित्यो विश्वेन तपसा सह।

सपत्नान्मह्यं रन्धयन्मा चाहं द्विषते रधं तवेद्विष्णो बहुधा वीर्याणि।

त्वं नः पृणीहि पशुभिर्विश्वरूपैः सुधायां मा धेहि परमे व्योमन्॥24॥

(उदगात्) उदय हो चुका है (अयम्) यह (आदित्यः) अनाशवान् दिव्यता, इन्द्र और विष्णु की संयुक्त शक्ति (विश्वेन) सब (तपसा) तपस्याएँ, आभा (सह) के साथ (सपत्नान्) शत्रु (आन्तरिक और बाहरी) (मह्यम्) मुझको (रन्धयन्) नियंत्रण में (मा) नहीं (च) और (अहम्) मेरा (द्विषते) शत्रुतापूर्ण मन रखने वाले (रधम्) नष्ट करते हुए (तव) आप (इत्) केवल (विष्णो) सर्वव्यापक, परमात्मा (बहुधा) बहुत सारे, अनेक रूपों में (वीर्याणि) बहादुरी, शक्तियाँ, गतिविधियाँ (त्वम्) आप (नः) हमें (पृणीहि) पूर्ण, आशीर्वाद (पशुभिः) सभी जीवों के साथ (विश्व रूपैः) सभी रूपों वाला (सुधायाम्) पूर्ण पोषण में, आनन्द में, अमृत में (मा) मेरे (धेहि) प्रदान करो, स्थापित करो (परमे व्योमन्) स्वयं सर्वोच्च आकाश में स्थापित, अस्तित्वमय भौतिक संसार से परे, क्वांटम (मापने योग्य अस्तित्व का निर्माता)।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



व्याख्या :-

दिव्यता के उदय होने के बाद हमें क्या प्रार्थना करनी चाहिए?

अनाशवान् दिव्यता, इन्द्र और विष्णु की संयुक्त शक्ति, सभी तपस्याओं और आभा के साथ उदय हो चुकी है। मेरे शत्रु (आन्तरिक और बाहरी) मेरे नियंत्रण में रहें और मैं उनके नियंत्रण में न रहूँ जो मुझे नष्ट करने के लिए मेरे प्रति शत्रुओं वाला मन रखते हैं।

‘विष्णु’, सर्वव्यापक, परमात्मा केवल आपकी साहसी शक्तियाँ और गतिविधियाँ बहुत सारी और अनेकों रूपों वाली है।

आप, विश्वरूपा, अनेकों रूपों वाले, कृपया सभी जीवों के साथ और सभी माध्यमों के साथ हमें आशीर्वाद दो।

कृपया मेरे अन्दर पूर्ण पोषण, आनन्द और प्रफुल्लित करने वाला अमृत प्रदान करो और स्थापित करो। परमे व्योमन् अर्थात् स्वयं सर्वोच्च आकाश में स्थापित, अस्तित्वमय भौतिक संसार से परे, आधुनिक विद्वानों की क्वांटम अवधारणा से बहुत अधिक है।

जीवन में सार्थकता :-

मानव जन्म किस प्रकार दिव्यता का उदय है?

मानव जीवन अपने आपमें एक दिव्य उपलब्धि है। जन्म के बाद कोई व्यक्ति अपने पुराने शत्रुओं को याद नहीं रखता। शत्रुता की प्रवृत्तियों की श्रृंखला शारीरिक रूप से टूट जाती है। बेशक मन की प्रवृत्ति के रूप में यह बनी रहती है। इसलिए मनुष्य जन्म मिलने के बाद हमें परमात्मा से प्रार्थना करनी चाहिए कि शत्रुओं के साथ सम्पर्क की श्रृंखला समाप्त हो जाये।

इसी प्रकार, हर उपलब्धि पर, प्रगति या उत्थान पर, हमें इसे अपने जीवन में दिव्यता का उदय मानना चाहिए, इस प्रार्थना के साथ कि हम हर प्रकार के शत्रुओं से मुक्त रहें, यहाँ तक कि अपने आन्तरिक विचारों की किसी कमजोरी से भी मुक्त रहें, बल्कि हमें इन सबको अपने नियंत्रण में रखना चाहिए।

हमें मानव जीवन की प्रत्येक अवस्था को दिव्य समझना चाहिए और इसे सर्वोच्च दिव्यता के समर्पित करना चाहिए जिससे हम कभी भी पतन का सामना नहीं करेंगे। जीवन उत्थान के लिए है पतन के लिए नहीं। हमारे शत्रु (आन्तरिक और बाहरी, जीवन के बन्धन और सांप) हमें पतन की ओर ले जाते हैं।

सूक्ति :- (उदगात् अयम् आदित्यः विश्वेन तपसा सह — अथर्ववेद 17.1.24) अनाशवान् दिव्यता, इन्द्र और विष्णु की संयुक्त शक्ति, सभी तपस्याओं और आभा के साथ उदय हो चुकी है।

अथर्ववेद 17.1.25

आदित्य नावमारुक्षः शतारित्रां स्वस्तये।
अहर्मात्यपीपरो रात्रिं सत्राति पारय।।25।।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM
Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.
For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



(आदित्य) परमात्मा, अन्तहीन शक्तियों का स्वामी (नावम्) नाव पर (इस सृष्टि की) (आरुक्षः) चढ़ा हुआ है (शतारित्राम्) सैकड़ों चप्पुओं वाला (असंख्य दिव्य सहायक व्यवस्थाओं के साथ) (स्वस्तये) कल्याण, प्रसन्नता के लिए (अहः) दिन (मा) मुझे, मेरा (अति अपीपरः) पूरी तरह से पार करने योग्य बनाया (रात्रिम्) रात्रि (सत्र) भी (आति पारय) पूरी तरह से पार करने योग्य बनाता है।

व्याख्या :-

इस सृष्टि की नाव को कौन चला रहा है?

हम परमात्मा से रात्रि में क्या प्रार्थना करें?

आदित्य, अन्तहीन शक्तियों के स्वामी, परमात्मा, उस नाव (इस सृष्टि रूपी) पर चढ़े हुए हैं जिनके पास हमारे कल्याण के लिए सैकड़ों चप्पु (असंख्य दिव्य सहायक व्यवस्थाएँ) हैं। आपने मेरे दिन को पूरी तरह से और सुन्दरता के साथ पार करवा दिया है, कृपया मेरी रात्रि को भी पूरी तरह से सुन्दरता के साथ पार करवाना।

जीवन में सार्थकता :-

बीते हुए समय के बारे में परमात्मा के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का क्या उद्देश्य है?

असंख्य चप्पुओं वाली नाव कौन सी है?

सर्वशक्तिमान परमात्मा की अन्तहीन दिव्य शक्तियाँ हैं, जिनके द्वारा वह इस सृष्टि की नाव को चलाता है। उसी सभी दिव्य शक्तियाँ ही असंख्य चप्पु हैं। हमारे लिए प्रत्येक दिन और बल्कि प्रत्येक क्षण बीते हुए समय की कृतज्ञता से पूर्ण होना चाहिए और आने वाले समय की प्रार्थना से पूर्ण होना चाहिए।

हमारी कृतज्ञता सभी दिव्य शक्तियों के प्रति हो और हमारे पितृ लोक के प्रति हो अर्थात् हमारे पूर्वजों का वह संसार जिनके कारण हम वर्तमान का आनन्द ले रहे हैं। यह कृतज्ञता और प्रार्थना निश्चित रूप से हमें इस बात की अनुभूति में सहायता करेगी कि हम अपने जीवन में किसी भी कार्य को स्वयं करने योग्य नहीं हैं बल्कि केवल परमात्मा और उसकी दिव्य शक्तियाँ और लोग वास्तविक कर्ता हैं और हमें सुख उपलब्ध करवाने वाले हैं।

सूक्ति :- (आदित्य नावम् आरुक्षः शतारित्राम् स्वस्तये – अथर्ववेद 17.1.25) आदित्य, अन्तहीन शक्तियों के स्वामी, परमात्मा, उस नाव (इस सृष्टि रूपी) पर चढ़े हुए हैं जिनके पास हमारे कल्याण के लिए सैकड़ों चप्पु (असंख्य दिव्य सहायक व्यवस्थाएँ) हैं।

अथर्ववेद 17.1.26

सूर्य नावमारुक्षः शतारित्रां स्वस्तये।

रात्रिं मात्यपीपरोऽहः सत्राति पारय।।26।।

(सूर्य) सूर्य, परमात्मा की दिव्य शक्ति जो प्रकाशवान करती है (नावम्) नाव पर (इस सृष्टि की) (आरुक्षः) चढ़ा हुआ है (शतारित्राम्) सैकड़ों चप्पुओं वाला (असंख्य दिव्य सहायक व्यवस्थाओं के साथ) (स्वस्तये) कल्याण, प्रसन्नता के लिए (रात्रिम्) रात्रि (मा) मुझे, मेरा (अति अपीपरः) पूरी तरह से पार करने योग्य बनाया (अहः) दिन (सत्र) भी (आति पारय) पूरी तरह से पार करने योग्य बनाता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



व्याख्या :-

हमारे जीवन में सूर्य की क्या भूमिका है?

सूर्य, परमात्मा की दिव्य शक्ति जो प्रकाशवान करती है, उस नाव (इस सृष्टि रूपी) पर चढ़ा हुआ जिनके पास हमारे कल्याण के लिए सैकड़ों चप्पु (असंख्य दिव्य सहायक व्यवस्थाएँ) हैं। आपने मेरी रात्रि को पूरी तरह से और सुन्दरता के साथ पार करवा दिया है, कृपया मेरे दिन को भी पूरी तरह से सुन्दरता के साथ पार करवाना।

जीवन में सार्थकता :-

क्या हमारा स्तर, शक्तियाँ या हमारी वस्तुएँ रात्रि में निद्रा के समय हमारी सहायता करती हैं?

दृश्यमान सूर्य और परमात्मा गुण स्वभाव में समान कैसे हैं?

यहाँ तक कि एक व्यक्ति जिसके अहंकार का बहुत उच्च स्तर हो, शक्तियाँ और वस्तुएँ हों, वह भी इस बात की अनुभूति करता है कि उसे रात्रि पार करने योग्य कौन बनाता है और अपने इस स्तर का आनन्द लेने के लिए उसे अगले दिन जीवित कौन रखता है। निद्रा के समय उसका स्तर, शक्तियाँ और उसकी वस्तुएँ किसी रूप में भी उसकी सहायता करती हुई दिखाई नहीं देती। यह केवल परमात्मा की दिव्य सहायक व्यवस्थाएँ ही उसे निद्रा के समय भी संरक्षित करती हैं। इसलिए सुख पूर्वक दिन बिताने के बाद प्रत्येक व्यक्ति को परमात्मा के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए रात्रि में भी संरक्षण की प्रार्थना करनी चाहिए। इसी प्रकार प्रतिदिन प्रातः उठने के बाद उसी प्रकार की कृतज्ञता सूर्य की उपस्थिति में भी करनी चाहिए।

हमारे सौरमण्डल के इस दृश्यमान सूर्य के अतिरिक्त परमात्मा अदृश्य रूप में स्वयं इस सारी सृष्टि का वास्तविक और मूल सूर्य है क्योंकि वह चमक रहा है और प्रकाशवान है, सभी दिव्य शक्तियों और लोगों को चमकाता है और प्रकाशित करता है। दृश्यमान सूर्य भी सभी दिव्य शक्तियों और लोगों को चमकाता है और प्रकाशित करता है। इस प्रकार दृश्यमान सूर्य परमात्मा के ही गुण लक्षणों का अनुसरण करता है।

अथर्ववेद 17.1.27

प्रजापतेरावृतो ब्रह्मणा वर्मणाहं कश्यपस्य ज्योतिषा वर्चसा च।

जरदष्टिः कृतवीर्यो विहायाः सहस्रायुः सुकृतश्चरेयम्।।27।।

(प्रजापतेः) सभी जीवों का स्वामी और संरक्षक (आवृतः) आवृत, संरक्षित (ब्रह्मणा) दिव्य ज्ञान के साथ (वर्मणा) कवच वाला बनाया गया (अहम्) मैं (कश्यपस्य) सभी कवियों का, परमात्मा (ज्योतिषा) ज्ञान के प्रकाश के साथ (वर्चसा) प्रतिभा और चमक के साथ (च) और (जरदष्टिः) जीवन की वृद्धावस्था (कृतवीर्यः) बहादुर कार्यों को करने वाला (विहायाः) भिन्न-भिन्न प्रकार के ज्ञान और गतियों वाला (सहस्रायुः) पूर्ण और लम्बी आयु को प्राप्त कर चुका (सुकृतः) उत्तम कार्य करने वाला (चरेयम्) लगातार गतिशील।

व्याख्या :-

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



हम सक्रिय लम्बा जीवन कैसे प्राप्त कर सकते हैं?

सब जीवों के स्वामी और संरक्षक, परमात्मा, के दिव्य ज्ञान से आवृत और संरक्षित, मैं कवियों के कवि, परमात्मा के दिव्य ज्ञान के प्रकाश, प्रतिभा और चमक से सुसज्जित हूँ। जीवन की वृद्धावस्था में पहुँचने के बावजूद भिन्न-भिन्न विषयों के ज्ञान और गति से अवगत होते हुए, बहादुरीपूर्ण कार्यों को करते हुए, उत्तम कार्यों को करते हुए लगातार गतिशील हूँ और यह सब पूर्ण लम्बी आयु तक चलता रहेगा।

जीवन में सार्थकता :-

किसका जीवन दिव्य बनता है?

एक महान श्रेष्ठ पुरुष अपने सभी कार्यों को और यहाँ तक कि अपने सम्पूर्ण जीवन को परमात्मा के प्रति समर्पित कर देता है। वह परमात्मा के ज्ञान में जीता है, उसके संरक्षण में विश्वास करते हुए और प्रतिक्षण उसको अनुभव करते हुए। ऐसा श्रद्धालु सदैव परमात्मा की प्रेमपूर्ण संगति का आनन्द लेता है और परिपक्व होने पर एक दिव्य जीवन बन जाता है।

अथर्ववेद 17.1.28

परिवृतो ब्रह्मणा वर्मणाहं कश्यपस्य ज्योतिषा वर्चसा च ।
मा मा प्रापन्निषवो दैव्या या मा मानुषीरवसृष्टाः वधाय ।।28 ।।

(परिवृतः) सभी दिशाओं से आवृत (ब्रह्मणा) दिव्य ज्ञान के साथ (वर्मणा) कवच वाला बनाया गया (अहम्) मैं (कश्यपस्य) सभी कवियों का, परमात्मा (ज्योतिषा) ज्ञान के प्रकाश के साथ (वर्चसा) प्रतिभा और चमक के साथ (च) और (मा) नहीं (मा) मैं (प्रापन्) प्राप्त करता, आता है (इषवः) तीर (दैव्या) दिव्यता के (याः) वे जो हैं (मा) नहीं (मानुषीः) मुझसे (अव सृष्टाः) निर्मित, फेंके गये (वधाय) नष्ट करने के लिए।

व्याख्या :-

दिव्य संसार के तीरों से कौन बच सकता है?

सब जीवों के स्वामी और संरक्षक, परमात्मा, के दिव्य ज्ञान से चारों तरफ से आवृत, मैं सभी कवियों के कवि परमात्मा के दिव्य ज्ञान, प्रतिभा और चमक से सुसज्जित हूँ।

दिव्य संसार में से मेरे पास तीर न आयें और वे तीर जो मनुष्यों द्वारा तथा भौतिक संसार के द्वारा मुझे नष्ट करने के लिए भेजे जाते हैं वे भी मेरे पास न आयें।

जीवन में सार्थकता :-

आधुनिक युग के लोग आध्यात्मिक संसार की शक्तियों से अनजान क्यों हैं?

जो व्यक्ति अपने आध्यात्मिक संसार अर्थात् परमात्मा की आध्यात्मिक शक्तियों से जुड़ा होता है वह भौतिक संसार अर्थात् अधिभौतिक और यहाँ तक कि दिव्य संसार अर्थात् अधिदैविक शक्तियों के तीरों से व्यथित नहीं होता।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



आध्यात्मिक शक्तियों का बल महान् और दिव्य है। किन्तु आधुनिक युग के लोग दृश्यमान भौतिक संसार में इतने अधिक संलिप्त हैं कि वे आध्यात्मिक संसार की शक्तियों से अनजान ही रहते हैं क्योंकि ये शक्तियाँ दिखाई नहीं देती।

अथर्ववेद 17.1.29

ऋतेन गुप्त ऋतुभिश्च सर्वैर्भूतेन गुप्तो भव्येन चाहम्।
मा मा प्रापत्पाप्मा मोत मृत्युरन्तर्दधेऽहं सलिलेन वाचः॥29॥

(ऋतेन) वास्तविक सत्य से (गुप्तः) संरक्षित (ऋतुभिः) ऋतुओं के साथ (च) और (सर्वैः) सब (भूतेन) पूर्वकाल से, पाँच स्थूल तत्त्वों से (गुप्तः) संरक्षित (भव्येन) भविष्य से, सन्तान से (च) और (अहम्) मैं (मा) नहीं (मा) मुझे (प्रापत्) प्राप्त करवाता है, आता है (पाप्मा) पाप, बुराईयाँ (म) नहीं (उत) और (मृत्युः) मृत्यु (अन्तः) अन्दर (दधे) धारण करता है, स्थापित करता है (अहम्) मैं (सलिलेन) जल के साथ (वाचः) वाणियों का (दिव्य ज्ञान)।

व्याख्या :-

वास्तविक सत्य का अनुसरण करने के क्या परिणाम हैं?

मैं वास्तविक सत्य (परमात्मा) से संरक्षित हूँ और प्रतिक्षण सभी ऋतुओं से भी; भूतकाल से सुरक्षित हूँ, पाँच भूत तत्त्वों से सुरक्षित हूँ तथा भविष्य से सुरक्षित हूँ, सन्तानों से सुरक्षित हूँ। मैं कभी भी पापों, बुराईयाँ और मृत्यु को प्राप्त न होऊँ। मैं अपने अन्दर जल के साथ दिव्य वाणियों को धारण करूँ (जैसे कि मैं दिव्य ज्ञान के समुद्र में जी रहा हूँ, मैं मूल्यवान तरल के बल के साथ दिव्य ज्ञान को धारण करता हूँ)।

जीवन में सार्थकता :-

परमात्मा के समुद्र में कौन गतिमान है?

यदि हम प्रतिक्षण परमात्मा का अपनी चेतना में अनुसरण करें तो हम एक महान् आध्यात्मिक उत्थान को प्राप्त कर सकते हैं। हमें यह अनुभूति होने लगेगी कि हम परमात्मा की गोद में जी रहे हैं। हमारा शरीर रूपी यह नाव परमात्मा के समुद्र में गतिमान है। हम परमात्मा के समुद्र में सभी दिव्यताओं के सम्पर्क में हैं।

सूक्ति :- (ऋतेन गुप्तः ऋतुभिः च सर्वैः भूतेन गुप्तः भव्येन च – अथर्ववेद 17.1.29) मैं वास्तविक सत्य (परमात्मा) से संरक्षित हूँ और प्रतिक्षण सभी ऋतुओं से भी; भूतकाल से सुरक्षित हूँ, पाँच भूत तत्त्वों से सुरक्षित हूँ तथा भविष्य से सुरक्षित हूँ, सन्तानों से सुरक्षित हूँ।

(अहम् मा मा प्रापत् पाप्मा म उत मृत्युः अन्तः दधे अहम् सलिलेन वाचः – अथर्ववेद 17.1.29) मैं कभी भी पापों, बुराईयाँ और मृत्यु को प्राप्त न होऊँ। मैं अपने अन्दर जल के साथ दिव्य वाणियों को धारण करूँ (जैसे कि मैं दिव्य ज्ञान के समुद्र में जी रहा हूँ, मैं मूल्यवान तरल के बल के साथ दिव्य ज्ञान को धारण करता हूँ)।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



अथर्ववेद 17.1.30

अग्निर्मा गोप्ता परि पातु विश्वत उद्यन्तसूर्यो नुदतां मृत्युपाशान् ।
व्युच्छन्तीरुषसः पर्वता ध्रुवाः सहस्रं प्राणा मय्या यतन्ताम् ।।30 ।।

(अग्निः) परमात्मा का ऊर्जा रूप (मा) मुझे (गोप्ता) जीवन का संरक्षक (परि पातु) सभी दिशाओं से सुरक्षित करता है (विश्वतः) सबको (जीवों को) (उद्यन्त) उदय होते हुए (सूर्यः) सूर्य (प्रकाश का, ज्ञान का) (नुदताम्) हटाता है (मृत्यु पाशान्) मृत्यु के बन्धनों और सांपों को (व्युच्छन्तीः) चमक पैदा करते हुए, अन्धकार और अज्ञानता को दूर करते हुए (उषसः) प्रथम किरणें (सूर्योदय से पूर्व की) (पर्वताः) पर्वत (ध्रुवाः) दृढ़ (सहस्रम्) हजारों (असंख्य) (प्राणा) श्वास, जीवन के बल (मयि) मुझमें (आ यतन्ताम्) प्रयास उपलब्ध कराता है।

व्याख्या :-

हमारे जीवन में ऊर्जा क्या करती है?

परमात्मा का ऊर्जा रूप, जीवन का संरक्षक, हम सब जीवों की सभी दिशाओं से रक्षा करें।

उदय होता हुआ सूर्य (प्रकाश का, ज्ञान का) मृत्यु के बन्धनों और सांपों को दूर हटा सके।

उदय होते हुए सूर्य की प्रथम किरणें चमक पैदा करती हुई, अन्धकार और अज्ञान को दूर करती हुई, पर्वतों की तरह दृढ़ हैं।

हजारों (असंख्य) श्वास, जीवन की शक्तियाँ मुझमें प्रयास उपलब्ध करवाती हैं।

जीवन में सार्थकता :-

हमारा व्यक्तिगत अहंकार किस प्रकार अस्तित्वहीन है?

सर्वशक्तिमान परमात्मा ऊर्जा रूप में प्रतिक्षण, प्रतिदिन असंख्य तरीकों से हमारे सामने अभिव्यक्त होते हैं और उपस्थित होते हैं जैसे ऊषा, सूर्य, वायु, जल, श्वास आदि। हम परमात्मा की इस ऊर्जा रूप के बिना जी नहीं सकते। इसलिए हमारे सभी प्रयास परमात्मा के ही कार्य माने जाने चाहिए। इनका अपना कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं है। इसलिए अपने कर्त्ता होने का दावा करने या उसे महसूस करने का कोई विचार ही नहीं होना चाहिए। हमारे व्यक्तिगत अस्तित्व, शक्तियों, वस्तुओं और सामाजिक स्तर का अहंकार अस्तित्वहीन और निराधार है। हमारे परिवार, समाज, वर्ग और राष्ट्र आदि का गठन बड़े स्तर का अहंकार है।

अपने व्यक्तिगत या किसी वर्ग के अहंकार के विचार व्यक्त करने या उसका संवर्द्धन करने को पाप और ईश्वर निन्दा समझा जाना चाहिए क्योंकि जब कोई व्यक्ति स्वयं को कर्त्ता होने का दावा करता है तो इसका अभिप्राय है कि वह वास्तविक कर्त्ता तथा प्राणों के देने वाले और असंख्य दिव्य शक्तियों वाले परमात्मा को भूल चुका है। हम उसकी शक्तियों के अन्तर्गत कार्य करते हैं। इसलिए हमें उसी के नाम से कार्य करना चाहिए। सभी अनुशासन प्रिय संगठनों जैसे सेना आदि या सरकारी कार्य प्रणाली में भी ऐसा ही होता है। परमात्मा की शक्ति के बिना हम अस्तित्वहीन हैं। सर्वोच्च अधिकारी की शक्ति के बिना भी हम अस्तित्वहीन हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



सूक्ति 1 :- (अग्निः मा गोप्ता परि पातु विश्वतः – अथर्ववेद 17.1.30) परमात्मा का ऊर्जा रूप, जीवन का संरक्षक, हम सब जीवों की सभी दिशाओं से रक्षा करें।

सूक्ति 2 :- (सहस्रम् प्राणा मयि आ यतन्ताम् – अथर्ववेद 17.1.30) हजारों (असंख्य) श्वास, जीवन की शक्तियाँ मुझमें प्रयास उपलब्ध करवाती हैं।

This file is incomplete/under construction